नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 206
दि. 30.04.2026,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

बंगाल में मतदान का महाआयोजन: 90% के पार पहुंची भागीदारी ने रचा नया इतिहास

कोलकाता। लोकतंत्र के पर्व में पश्चिम बंगाल ने इस बार जो तस्वीर पेश की है, उसने न केवल राज्य बल्कि पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। जिस तरह से यहां मतदान के आंकड़े लगातार नए कीर्तिमान गढ़ रहे हैं, उसने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या यह केवल चुनावी उत्साह है या फिर इसके पीछे कोई गहरी सामाजिक और राजनीतिक चेतना काम कर रही है। बुधवार 29 अप्रैल को दूसरे चरण का मतदान पूरा होने के साथ ही यह लगभग तय हो गया है कि इस बार राज्य में मतदान का प्रतिशत 90 के आंकड़े को पार कर जाएगा, जो अब तक के इतिहास में अभूतपूर्व माना जा रहा है।

अगर आंकड़ों पर गौर करें तो इस बार का चुनाव वास्तव में कई मायनों में ऐतिहासिक बनता जा रहा है। पहले चरण में जहां 93.19 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया, वहीं दूसरे चरण में भी यह आंकड़ा 90 प्रतिशत से ऊपर बना हुआ है और अंतिम आंकड़ों में इसके और बढ़ने की संभावना जताई जा रही है। इस तरह दोनों चरणों का औसत मतदान 90 प्रतिशत से अधिक पहुंच गया है, जो न केवल पश्चिम बंगाल के चुनावी इतिहास में सबसे ज्यादा है, बल्कि यह देश के अन्य राज्यों के रिकॉर्ड को भी चुनौती देता नजर आ रहा है। अब तक सबसे ज्यादा मतदान का राष्ट्रीय रिकॉर्ड त्रिपुरा के नाम रहा है, जहां 2013 में 91.82 प्रतिशत मतदान हुआ था, लेकिन बंगाल इस आंकड़े को भी पार कर सकता है।

इस चुनाव में कुल 1,448 प्रत्याशियों की किस्मत ईवीएम में कैद हो चुकी है और अब सभी की नजरें नतीजों पर टिकी हैं। लेकिन नतीजों से पहले जिस चीज ने सबसे ज्यादा चर्चा बटोरी है, वह है मतदाताओं की अभूतपूर्व भागीदारी। यह भागीदारी केवल संख्या नहीं है, बल्कि यह एक संदेश भी है कि राज्य के लोग अपने अधिकारों और लोकतांत्रिक जिम्मेदारियों को लेकर पहले से कहीं अधिक जागरूक हो चुके हैं।

अगर पिछले चुनावों के आंकड़ों से तुलना की जाए तो यह बदलाव और भी स्पष्ट नजर आता है। 2011 में, जब राज्य में सत्ता परिवर्तन हुआ था और ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने 34 साल पुराने वामपंथी शासन को समाप्त किया था, उस समय मतदान का प्रतिशत 84.33 था, जो उस दौर का सबसे ज्यादा आंकड़ा था। उससे पहले 1996 और 2006 में मतदान 80 प्रतिशत के पार गया था, लेकिन 90 प्रतिशत के आंकड़े को छूने की बात तो दूर, उसके करीब भी नहीं पहुंच पाया था। यही कारण है कि 2026 का यह चुनाव एक नई राजनीतिक और सामाजिक दिशा की ओर संकेत करता नजर आ रहा है।

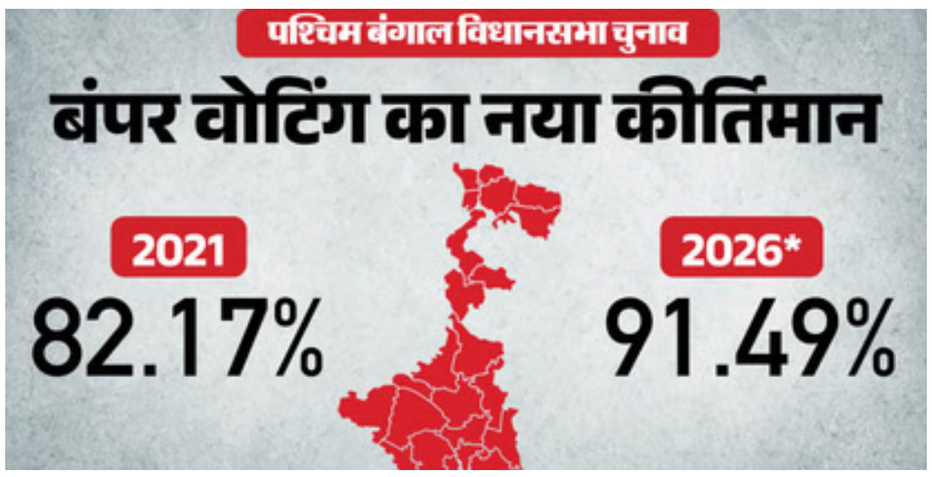

इस बार के चुनाव की एक और खास बात यह रही कि जहां 2021 में मतदान आठ चरणों में कराया गया था, वहीं 2026 में इसे केवल दो चरणों में पूरा कर लिया गया। इसके बावजूद मतदान प्रतिशत में जो बढ़ोतरी देखने को मिली है, वह अपने आप में आश्चर्यजनक है। 2021 में कुल मतदान प्रतिशत 82.17 रहा था, जबकि इस बार यह 90 प्रतिशत के पार पहुंच गया है। यदि समान सीटों पर तुलना की जाए तो यह अंतर और भी स्पष्ट हो जाता है। 2021 में जिन सीटों पर पहले चरण में 83.18 प्रतिशत और दूसरे चरण में 81.08 प्रतिशत मतदान हुआ था, वहीं 2026 में उन्हीं सीटों पर यह आंकड़ा क्रमशः 93.19 और 90 प्रतिशत से अधिक पहुंच गया है।

मतदाताओं की संख्या के लिहाज से भी यह चुनाव रिकॉर्ड तोड़ता नजर आ रहा है। 2021 में जहां राज्य में कुल 7.34 करोड़ मतदाता पंजीकृत थे, वहीं इस बार विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के बाद यह संख्या घटकर 6.82 करोड़ रह गई। इसके बावजूद मतदान करने वालों की संख्या में वृद्धि देखी गई है। इस बार अब तक 6.25 करोड़ से अधिक लोग अपने मताधिकार का प्रयोग कर चुके हैं, जो पिछले चुनाव के मुकाबले अधिक है। यह इस बात का संकेत है कि मतदाता सूची में कमी के बावजूद लोगों की भागीदारी में कोई कमी नहीं आई, बल्कि उसमें और वृद्धि हुई है।

इस अभूतपूर्व मतदान के पीछे कई कारण हो सकते हैं। एक ओर जहां राजनीतिक दलों ने व्यापक स्तर पर प्रचार अभियान चलाए, वहीं दूसरी ओर चुनाव आयोग द्वारा मतदाता जागरूकता के लिए किए गए प्रयासों का भी असर देखने को मिला। इसके अलावा सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर बढ़ती जागरूकता ने भी लोगों को मतदान केंद्र तक पहुंचने के लिए प्रेरित किया। यह भी संभव है कि राज्य में लंबे समय से चल रही राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और ध्रुवीकरण ने मतदाताओं को अधिक सक्रिय बना दिया हो।

हालांकि, इस रिकॉर्ड मतदान के साथ कुछ सवाल भी उठ रहे हैं। इतनी बड़ी संख्या में मतदान होना जहां लोकतंत्र के लिए सकारात्मक संकेत है, वहीं यह भी जरूरी है कि इस प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर भी बराबर ध्यान दिया जाए। चुनाव आयोग और प्रशासन के लिए यह एक बड़ी जिम्मेदारी है कि वे सुनिश्चित करें कि हर वोट सही तरीके से दर्ज हो और किसी प्रकार की अनियमितता न हो।

इसके बावजूद, यह कहना गलत नहीं होगा कि पश्चिम बंगाल ने इस बार लोकतंत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का जो उदाहरण पेश किया है, वह प्रेरणादायक है। यह केवल एक राज्य का चुनाव नहीं रह गया है, बल्कि यह पूरे देश के लिए एक संदेश बन गया है कि जब नागरिक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं, तो वे किस तरह इतिहास रच सकते हैं।

अब सबकी नजरें आने वाले परिणामों पर टिकी हैं, जो यह तय करेंगे कि इतनी भारी मतदान का असर किसके पक्ष में जाता है। लेकिन परिणाम चाहे जो भी हों, यह स्पष्ट है कि इस बार का चुनाव भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में दर्ज होगा। पश्चिम बंगाल ने यह दिखा दिया है कि लोकतंत्र केवल एक व्यवस्था नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रक्रिया है, जिसमें हर नागरिक की भागीदारी ही उसकी असली ताकत होती है।

वैश्विक भूख संकट की भयावह तस्वीर: 47 देशों में करोड़ों लोग भुखमरी की चपेट में, पाकिस्तान सबसे प्रभावित देशों में शामिल

नई दिल्ली। दुनिया एक ऐसे मानवीय संकट की ओर बढ़ रही है, जहां विकास और तकनीकी प्रगति के बीच भी करोड़ों लोग दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। Global Report on Food Crises 2026 की ताजा रिपोर्ट ने इस कठोर सच्चाई को उजागर किया है कि वर्ष 2025 में 47 देशों में करीब 26.6 करोड़ लोग भुखमरी से प्रभावित रहे। यह आंकड़ा वर्ष 2016 की तुलना में लगभग दोगुना है, जो इस बात का संकेत है कि वैश्विक स्तर पर खाद्य सुरक्षा की स्थिति तेजी से बिगड़ रही है और तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

इस रिपोर्ट के अनुसार, सबसे अधिक प्रभावित देशों में पाकिस्तान भी शामिल है, जहां हालात विशेष रूप से चिंताजनक बने हुए हैं। पाकिस्तान में लगभग 1.1 करोड़ लोग भूख से प्रभावित हैं, जिनमें से 93 लाख लोग गंभीर खाद्य संकट का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा करीब 17 लाख लोग ऐसे हैं जो आपात स्थिति में हैं, जहां भोजन की उपलब्धता बेहद सीमित है और जीवन बचाना ही सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। यह स्थिति केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लाखों परिवारों की रोजमर्रा की त्रासदी बन चुकी है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि पाकिस्तान में इस संकट के पीछे कई कारण एक साथ काम कर रहे हैं। लगातार बारिश और विनाशकारी बाढ़ ने करीब 60 लाख लोगों के जीवन को सीधे प्रभावित किया है। फसलों के नष्ट होने, कृषि भूमि के जलमग्न होने और बुनियादी ढांचे के क्षतिग्रस्त होने के कारण खाद्य उत्पादन और वितरण प्रणाली बुरी तरह प्रभावित हुई है। इसके साथ ही महंगाई दर में वृद्धि ने आम लोगों की क्रय शक्ति को कमजोर कर दिया है। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि वर्ष 2026 में महंगाई लगभग 6 प्रतिशत तक रह सकती है, जिससे खाद्य संकट और गहरा सकता है।

वैश्विक स्तर पर स्थिति और भी भयावह है। रिपोर्ट के अनुसार 32 देशों में 3.9 करोड़ से अधिक लोग ऐसे हैं, जो भोजन के अत्यंत गंभीर संकट से जूझ रहे हैं। यह वह स्थिति है, जहां लोगों को नियमित भोजन मिलना भी मुश्किल हो गया है और कुपोषण तेजी से बढ़ रहा है। वर्ष 2025 में करीब 3.55 करोड़ बच्चे कुपोषण का शिकार हुए, जिनमें से एक करोड़ बच्चे गंभीर कुपोषण की श्रेणी में आते हैं। यह आंकड़े केवल स्वास्थ्य संकट नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य पर मंडराते खतरे का संकेत भी हैं। महिलाओं की स्थिति भी कम चिंताजनक नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार 21 देशों में लगभग 92 लाख गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएं गंभीर कुपोषण से जूझ रही हैं। यह स्थिति न केवल उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि नवजात बच्चों के विकास पर भी प्रतिकूल असर डालती है। कुपोषण की यह श्रृंखला पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है और समाज के समग्र विकास को बाधित करती है।

भुखमरी का असर केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बड़े पैमाने पर विस्थापन का कारण भी बन रही है। वर्ष 2025 में करीब 8.5 करोड़ लोगों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। इनमें से लगभग 74 प्रतिशत लोगों को अपने ही देश के भीतर सुरक्षित स्थानों की तलाश में पलायन करना पड़ा। 17 देशों में विस्थापन की स्थिति बेहद गंभीर बनी हुई है। युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता और जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों ने इस संकट को और जटिल बना दिया है।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि पर्याप्त और पोषक भोजन की कमी के कारण कई क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। बच्चों और महिलाओं में कुपोषण के मामले बढ़ रहे हैं, वहीं युवाओं में टीबी जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। गाजा, म्यांमार, दक्षिणी सूडान और सूडान जैसे क्षेत्रों में स्थिति अत्यंत गंभीर बताई गई है, जहां कुपोषित बच्चों का जीवन स्तर तेजी से गिर रहा है और उनके जीवित रहने की संभावना भी कम होती जा रही है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह संकट और गहरा सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसमी घटनाएं बढ़ रही हैं, जिससे कृषि उत्पादन पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। इसके अलावा, कई देशों में जारी संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता खाद्य आपूर्ति को बाधित कर रही है। इन सभी कारकों का संयुक्त प्रभाव दुनिया के सबसे कमजोर वर्गों—बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों—पर सबसे अधिक पड़ रहा है।

यह रिपोर्ट एक चेतावनी है कि वैश्विक समुदाय को मिलकर इस समस्या का समाधान निकालना होगा। केवल राहत कार्यों से काम नहीं चलेगा, बल्कि दीर्घकालिक रणनीतियों की जरूरत है, जिनमें कृषि सुधार, जलवायु अनुकूल तकनीक, सामाजिक सुरक्षा योजनाएं और अंतरराष्ट्रीय सहयोग शामिल हों।

आज जब दुनिया तकनीकी और आर्थिक प्रगति के नए आयाम छू रही है, तब भी करोड़ों लोगों का भूख से जूझना एक गंभीर विडंबना है। यह केवल एक मानवीय संकट नहीं, बल्कि वैश्विक असमानता का भी प्रतीक है। यदि इस चुनौती का समय रहते समाधान नहीं किया गया, तो आने वाले वर्षों में इसके परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं।

दिल्ली नगर निगम में भाजपा का परचम: प्रवेश वाही बने महापौर, आप के बहिष्कार के बीच एकतरफा जीत

नई दिल्ली। राजधानी की नगर राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव दर्ज करते हुए प्रवेश वाही को दिल्ली नगर निगम का नया महापौर चुन लिया गया है। महापौर पद के लिए हुए चुनाव में उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार जहीर को भारी अंतर से पराजित कर भाजपा के लिए एक बड़ी राजनीतिक जीत सुनिश्चित की। यह परिणाम न केवल नगर निगम की सत्ता संतुलन को दर्शाता है, बल्कि राजधानी की राजनीति में बदलते समीकरणों की ओर भी संकेत करता है।

महापौर चुनाव में कुल 165 सांसदों, विधायकों और पार्षदों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। सभी मतों को वैध घोषित किया गया, जिससे प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता की पुष्टि हुई। परिणाम सामने आने पर यह स्पष्ट हो गया कि मुकाबला एकतरफा रहा। प्रवेश वाही को कुल 156 मत प्राप्त हुए, जबकि जहीर को मात्र नौ मतों से संतोष करना पड़ा। इस तरह 147 मतों के विशाल अंतर से जीत दर्ज करते हुए प्रवेश वाही ने न केवल अपनी व्यक्तिगत राजनीतिक ताकत का प्रदर्शन किया, बल्कि भाजपा के संगठनात्मक प्रभाव को भी मजबूती से स्थापित किया।

यह चुनाव ऐसे समय में हुआ जब नगर निगम की राजनीति पहले से ही काफी गर्माई हुई थी। विभिन्न दलों के बीच खींचतान और रणनीतिक फैसलों ने इस चुनाव को और भी दिलचस्प बना दिया था। खासकर आम आदमी पार्टी का चुनाव से दूरी बनाना एक बड़ा राजनीतिक संदेश माना जा रहा है। आप ने महापौर और उपमहापौर दोनों पदों के चुनाव का बहिष्कार करने का निर्णय लिया, जिसके चलते उसके पार्षद, सांसद और विधायक सदन में उपस्थित नहीं रहे। इस फैसले ने चुनावी समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया और भाजपा को स्पष्ट बढ़त मिल गई। उपमहापौर पद के चुनाव में भी स्थिति लगभग पहले से तय मानी जा रही थी। कांग्रेस द्वारा महापौर चुनाव के परिणाम को स्वीकार कर लेने के बाद उपमहापौर पद के लिए मतदान की आवश्यकता नहीं पड़ी और मोनिका पंत को निर्विरोध उपमहापौर घोषित कर दिया गया। यह भाजपा के लिए दोहरी जीत के रूप में देखा जा रहा है, जहां उसने न केवल महापौर बल्कि उपमहापौर पद पर भी कब्जा जमाया। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह परिणाम केवल संख्या बल का खेल नहीं है, बल्कि यह रणनीतिक निर्णयों और समय के अनुरूप उठाए गए कदमों का भी परिणाम है। आम आदमी पार्टी के बहिष्कार ने जहां एक ओर भाजपा के लिए रास्ता आसान किया, वहीं दूसरी ओर इसने यह भी दिखाया कि नगर निगम की राजनीति में अब केवल पारंपरिक प्रतिस्पर्धा ही नहीं, बल्कि रणनीतिक दूरी और चयनात्मक भागीदारी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हालांकि, आप ने यह स्पष्ट किया है कि वह पूरी तरह से राजनीतिक प्रक्रिया से अलग नहीं हो रही है। पार्टी ने संकेत दिया है कि वह नगर निगम की स्थायी समिति के सदस्यों के चुनाव में भागीदारी करेगी। यह समिति नगर निगम के प्रशासनिक और वित्तीय फैसलों में अहम भूमिका निभाती है, इसलिए यहां पर आप की सक्रियता आने वाले समय में नई राजनीतिक रणनीतियों को जन्म दे सकती है। इस पूरे घटनाक्रम को भारतीय जनता पार्टी के लिए एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है। दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र में नगर निगम की सत्ता पर पकड़ मजबूत करना भाजपा के लिए न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति में भी एक सकारात्मक संकेत है। यह जीत पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए उत्साहवर्धक साबित हो सकती है और आगामी चुनावों के लिए नई ऊर्जा प्रदान कर सकती है। वहीं, कांग्रेस के लिए यह परिणाम आत्ममंथन का विषय बन सकता है। जहीर को मिले केवल नौ मत यह दर्शाते हैं कि पार्टी को अभी भी नगर राजनीति में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए काफी प्रयास करने होंगे। हालांकि, कांग्रेस ने परिणाम को स्वीकार करते हुए लोकतांत्रिक प्रक्रिया का सम्मान किया है, जो उसकी राजनीतिक परिपक्वता को दर्शाता है। इस चुनाव ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि दिल्ली की नगर राजनीति अब केवल स्थानीय मुद्दों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह व्यापक राजनीतिक रणनीतियों और गठबंधनों का हिस्सा बन चुकी है। यहां लिए गए निर्णयों का असर न केवल नगर निगम के कामकाज पर पड़ता है, बल्कि यह राज्य और राष्ट्रीय स्तर की राजनीति को भी प्रभावित करता है।

आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि नई महापौर टीम किस तरह से राजधानी के विकास, सफाई व्यवस्था, जल निकासी, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य नगर सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए काम करती है। जनता की अपेक्षाएं काफी अधिक हैं और इस नई नेतृत्व टीम के सामने उन्हें पूरा करने की बड़ी चुनौती होगी। कुल मिलाकर, दिल्ली नगर निगम के इस चुनाव ने यह साबित कर दिया है कि राजनीति में केवल संख्या ही नहीं, बल्कि रणनीति, समय और निर्णय लेने की क्षमता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। प्रवेश वाही की यह जीत केवल एक पद प्राप्त करने की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस राजनीतिक परिदृश्य का प्रतिबिंब है, जो लगातार बदल रहा है और जिसमें हर कदम सोच-समझकर उठाना पड़ता है।

कोल्हापुर ब्लैकमेलिंग कांड पर सख्त एक्शन: राष्ट्रीय महिला आयोग ने 7 दिन में मांगी रिपोर्ट, बड़े गिरोह की आशंका

नई दिल्ली/मुंबई। महाराष्ट्र के कोल्हापुर से सामने आए महिलाओं और नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण और डिजिटल ब्लैकमेलिंग के सनसनीखेज मामले ने पूरे देश को झकझोर दिया है। इस गंभीर प्रकरण पर स्वतः संज्ञान लेते हुए राष्ट्रीय महिला आयोग ने कड़ा रुख अपनाया है और राज्य पुलिस को तत्काल प्रभाव से सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। आयोग ने मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए महाराष्ट्र के डीजीपी से सात दिनों के भीतर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है, जिससे साफ संकेत मिलता है कि इस मामले को लेकर किसी भी तरह की ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, यह पूरा मामला एक 22 वर्षीय फार्मेसी छात्र से जुड़ा है, जिस पर आरोप है कि उसने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए महिलाओं और नाबालिग लड़कियों को अपने जाल में फंसाया। आरोप है कि आरोपी ने पहले उनसे दोस्ती और विश्वास का संबंध बनाया, फिर उनका शारीरिक शोषण किया और उसके बाद अश्लील वीडियो बनाकर उन्हें लंबे समय तक ब्लैकमेल करता रहा। इस तरह की घटनाएं न केवल कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े करती हैं, बल्कि समाज में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर भी गहरी चिंता पैदा करती हैं।

आयोग ने इस घटना को महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा पर गंभीर प्रहार करार दिया है। आयोग की अध्यक्ष ने महाराष्ट्र पुलिस को लिखे अपने पत्र में स्पष्ट किया है कि मामले में कठोर

धाराओं के तहत कार्रवाई की जाए। इसमें भारतीय न्याय संहिता, पोक्सो एक्ट और सूचना प्रौद्योगिकी कानून की सख्त धाराओं को लागू करने का निर्देश दिया गया है, ताकि दोषियों को किसी भी हाल में बख्शा न जाए।

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि आयोग ने इस पूरे मामले को केवल एक व्यक्ति की करतूत मानने से इनकार किया है और इसके पीछे बड़े आपराधिक नेटवर्क की आशंका जताई है। आयोग का मानना है कि जिस तरीके से सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर नाबालिग लड़कियों को निशाना बनाया गया, वह एक सुनियोजित साजिश का हिस्सा हो सकता है। हाल ही में महाराष्ट्र के अमरावती में सामने आए इसी तरह के एक मामले ने इस आशंका को और मजबूत कर दिया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह समस्या कहीं अधिक व्यापक हो सकती है।

इस घटना ने डिजिटल युग में महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। सोशल मीडिया और इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर अपराध भी तेजी से बढ़ रहे हैं, और इस तरह के मामले यह दर्शाते हैं कि अपराधी तकनीक का किस तरह दुरुपयोग कर रहे हैं। ऐसे में कानून प्रवर्तन एजेंसियों के सामने चुनौती केवल अपराधियों को पकड़ने की नहीं, बल्कि इस तरह के नेटवर्क को पूरी तरह खत्म करने की भी है।

राष्ट्रीय महिला आयोग ने अपने निर्देशों में यह भी स्पष्ट किया है कि मामले से जुड़ी सभी आपत्तिजनक सामग्री को तुरंत इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से हटाया जाए। इसके साथ ही साइबर फॉरेंसिक जांच के जरिए यह पता लगाने के निर्देश दिए गए हैं कि क्या ये वीडियो किसी पोर्नोग्राफी वेबसाइट या डार्क वेब पर भी साझा किए गए हैं। यदि ऐसा पाया जाता है, तो यह मामला और भी गंभीर हो जाएगा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जांच की आवश्यकता पड़ सकती है। आयोग ने महाराष्ट्र पुलिस को स्पष्ट रूप से सात दिन की समयसीमा दी है, जिसके भीतर उन्हें इस पूरे मामले की विस्तृत रिपोर्ट पेश करनी होगी। इस रिपोर्ट में यह बताना होगा कि अब तक क्या कार्रवाई की गई है, कितने पीड़ितों की पहचान की गई है, मुख्य आरोपी के अलावा किन-किन लोगों की भूमिका सामने आई है और आगे की जांच किस दिशा में बढ़ रही है।

साथ ही, यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सभी पीड़ितों को उचित सुरक्षा और सहायता प्रदान की जाए, ताकि वे बिना किसी डर के न्याय की प्रक्रिया में सहयोग कर सकें।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह दिखा दिया है कि महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए केवल कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका सख्ती से पालन और समय पर कार्रवाई भी उतनी ही जरूरी है। यह मामला प्रशासन, समाज और तकनीकी प्लेटफॉर्म सभी के लिए एक चेतावनी है कि वे इस तरह के अपराधों को रोकने के लिए अधिक सतर्क और सक्रिय रहें।

फिलहाल, इस मामले में राष्ट्रीय महिला आयोग की सख्ती से यह उम्मीद जगी है कि जांच तेजी से आगे बढ़ेगी और दोषियों को जल्द से जल्द न्याय के कटघरे में लाया जाएगा। आने वाले दिनों में पुलिस की कार्रवाई और जांच रिपोर्ट यह तय करेगी कि यह मामला किस हद तक फैला हुआ है और क्या वास्तव में इसके पीछे कोई बड़ा नेटवर्क काम कर रहा है। तब तक यह घटना समाज को झकझोरती रहेगी और यह सवाल उठाती रहेगी कि डिजिटल युग में सुरक्षा की नई चुनौतियों से निपटने के लिए हम कितने तैयार हैं।

संपादकीय

मिले नए जिले मगर अहम मुद्दे अभी बाकी

जम्मू-कश्मीर से अलग होकर नया केंद्रशासित प्रदेश बनने के बाद लद्दाख में जनाकांक्षाओं का जो उफान उठा है, केंद्र सरकार उसकी पूर्ति की दिशा में बढ़ती नजर आ रही है। बीते साल राज्य का दर्जा देने और छठी अनुसूची में शामिल किए जाने जैसी प्रमुख मांगों को लेकर स्थानीय संगठन आंदोलित नजर आए थे। अब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के क्षेत्र के दौरे से पूर्व लद्दाख को पांच नये जिले मिले हैं। लेह और कारगिल के बाद- दो जिलों से बढ़कर सात जिलों तक का यह विस्तार इस पर्वतीय अंचल में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। निश्चित रूप से इस विशाल भू-भाग वाले, लेकिन कम आबादी वाले क्षेत्र में लोगों की सुविधा के लिए इस कदम की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। दरअसल, लद्दाख के नुब्रा, जांस्कर और चांगथांग जैसे दूरदराज के इलाकों में बुनियादी सार्वजनिक सेवाओं तक पहुंच बनाने में स्थानीय लोगों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। यह बाधा सिर्फ भौगोलिक ही नहीं थी, बर्फीले दिनों में स्थिति और अधिक कष्टकारी हो जाती है। इसमें दो राय नहीं कि किसी भी क्षेत्र में छोटी प्रशासनिक इकाइयां अधिकारियों को जनता के करीब ला सकती हैं। खासकर लद्दाख जैसे जटिल भौगोलिक परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में तो यह और भी जरूरी हो जाता है। निस्संदेह, छोटी प्रशासनिक इकाइयों के चलते सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के तुरंत क्रियान्वयन को सुगम बनाने में मदद मिल सकती है। सही मायनों में उपायुक्तों और पुलिस प्रमुखों की त्वरित नियुक्ति, बिना किसी देरी के सुशासन सुनिश्चित करने की दिशा में एक उत्साहजनक संकेत कहा जा सकता है। हालांकि, स्थानीय जनप्रतिनिधि संगठन नये जिले बनाने से संतुष्ट होते शायद ही नजर आएं। दरअसल, लद्दाख की चुनौतियां महज नौकरशाही तक ही सीमित नहीं कही जा सकती हैं। सही मायनों में ये राजनीतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय भी हैं। वे जनाकांक्षाएं भी इसमें शामिल हैं जो लद्दाख के केंद्रशासित प्रदेश बनने के बाद ऊंचे स्तर पर रही हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि लेह की अस्मिता की रक्षा के लिये आंदोलन चलाने वाले संगठन, मसलन कारगिल लोकतांत्रिक गठबंधन समेत कई स्थानीय समूह, लद्दाख को राज्य का दर्जा दिए जाने और लेह-लद्दाख की संस्कृति की रक्षा के लिये इसे छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग करते रहे हैं। दरअसल, वे इसके लिये संवैधानिक सुरक्षा उपायों को लागू करने का आग्रह करते हैं। इस सप्ताह के अंत तक लद्दाख में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की यात्रा के दौरान स्थानीय संगठन निर्णय स्तर की वार्ता की मांग कर रहे हैं। वे विगत में हुई विभिन्न बैठकों को क्षेत्र के लंबे समय से लंबित मामलों के समाधान के लिये अपर्याप्त बताते रहे हैं। वहीं दूसरी ओर पर्यावरणविद् व शिक्षाविद् सोनम वांगचुक, जिन्हें गत माह केंद्र सरकार ने लगभग छह माह की हिरासत के बाद रिहा किया था, ने भी शाह की यात्रा के दौरान एक रचनात्मक संवाद की जरूरत पर बल दिया है। वैसे राजग के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार गाहे-बगाहे लद्दाख के विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराती रही है। हालांकि, एक तथ्य यह भी है कि अभी तक लद्दाख को राज्य का दर्जा देने और छठी अनुसूची में शामिल करने जैसी प्रमुख मांगों को लेकर उसका दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं है। बहरहाल, क्षेत्र में पर्यटन नियमों में ढील और रोजगार के अवसरों को विस्तार देना जैसे सुधार, लद्दाख की आर्थिकी को गति देने का सार्थक प्रयास जरूर कहा जा सकता है। यह भी एक हकीकत है कि नवीनतम प्रशासनिक प्रक्रिया को लेकर जो आशावाद है, वह तभी सार्थक साबित होगा, जब इससे समावेशी विकास, बेहतर शासन और उचित राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित हो पायेगी। वहीं दूसरी ओर सरकार को इस व्यापक परिप्रेक्ष्य को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि लद्दाख चीन सीमा से लगा रणनीतिक महत्व का क्षेत्र है। इसीलिए यहां शांति बनाये रखना और कानून व्यवस्था को मजबूत बनाना केंद्र सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। हमें सितंबर, 2025 में हुए हिंसक विरोध प्रदर्शन को एक सबक की तरह लेने की जरूरत है। जिसके मद्देनजर लद्दाखी जनता की आकांक्षाओं को समयबद्ध तरीके से यथाशीघ्र पूरा किया जाना चाहिए।

लोक के प्रति कब जवाबदेह बनेगी नौकरशाही

"देश को अपने लोकतंत्र पर गर्व है, लेकिन इस व्यवस्था में राजनीतिक तंत्र के साथ ही प्रशासनिक और पुलिस अफसर लगातार मजबूत हुए हैं। अंग्रेज सरकार ने इंडियन सिविल सेवा यानी आईसीएस का गठन अपने राजकाज को मजबूत करने के लिए किया था। इसलिए शुरूआती दौर में इसमें गोरे लोगों को ही तवज्जो मिली।

सरदार पटेल ने भारतीय प्रशासनिक सेवा को 'स्टील फ्रेम' बताया था। संविधान सभा में प्रशासनिक सेवा पर बहस के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए मजबूत और तटस्थ नौकरशाही पर जोर दिया था। हालांकि अंग्रेजों के नौकरशाह रह चुके एचवी कामथ को चिंता थी कि वैधानिक सुरक्षा नौकरशाही को गैरजवाबदेह और असल 'शासक' बना सकती है। एक अप्रैल को चुनावी राज्य पश्चिम बंगाल के मालदा की घटना में नौकरशाही ने जैसा रूख अख्तियार किया है, उसे देख लगता है कि पटेल के भरोसे की तुलना में एचवी कामथ की चिंता समय की शिला पर सटीक साबित हुई है। मालदा में पूरे नौ घंटे तक सात न्यायिक अधिकारियों को सियासी कार्यकर्ता के मुखौटे वाले अपराधियों ने बंधक बनाए रखा। उस दौरान कलकत्ता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भी मुख्य सचिव से संपर्क करने में नाकाम रहे। दिलचस्प यह है कि जब सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य सचिव से जवाब-तलब किया तो उन्होंने माफी मांग कर काम चला लिया। उम्मीद थी कि सुप्रीम कोर्ट इस मामले में शीर्ष अधिकारियों को सबक सिखाने से पीछे नहीं रहेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह माफी से ही संतुष्ट हो गया। देश को अपने लोकतंत्र पर गर्व है, लेकिन इस व्यवस्था में राजनीतिक तंत्र के साथ ही प्रशासनिक और पुलिस अफसर लगातार मजबूत हुए हैं। अंग्रेज सरकार ने इंडियन सिविल सेवा यानी आईसीएस का गठन अपने राजकाज को मजबूत करने के लिए किया था। इसलिए शुरूआती दौर में इसमें गोरे लोगों को ही तवज्जो मिली। अंग्रेज सरकार भारतीयों को गुलाम मानती थी, लिहाजा उसके अफसर भी भारतीयों से उसी अंदाज में पेश आते थे। आजादी के बाद नौकरशाही के इस चरित्र को बदलने की कोशिश के तहत तटस्थ ब्यूरोक्रेसी के रूप में आईएएस कैडर बनाया गया। गांधी मानते थे कि आधुनिक राज व्यवस्था और नौकरशाही में हिंसा का वर्चस्व है। गांधी जी 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धांत के अनुसार प्रशासनिक या आर्थिक रूप से ताकतवर

लोगों से उम्मीद करते थे कि वे संसाधनों के स्वामी नहीं, बल्कि रक्षक की तरह व्यवहार करें। इसी अंदाज में नौकरशाही को सेवक बनाने की कोशिश हुई। लेकिन क्या नौकराशाह सेवक बन पाए? वे सिर्फ उन राजनीतिक आकाओं के ही सेवक बन पाए हैं, जो ताकतवर हैं और जिनसे उन्हें भविष्य में मलाईदार पदों और ताकत की उम्मीद है। यही वजह है कि आजादी के 79 साल बाद भी नौकरशाही का ज्यादातर हिस्सा सामंती मानसिकता से ही प्रभावित नजर आता है। जनता को वह अपनी रियाया मानता है। लोक से सामंतों जैसा व्यवहार करने में ही उसे हेठी नजर आती है। पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव दुष्यंत नरियाला का कलकत्ता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश का फोन नहीं उठाना इसी सोच का प्रतीक है। यह उस आशंका का भी जीवंत उदाहरण है, जो एचवी कामथ को परेशान कर रही थी। दिलचस्प यह है कि दुष्यंत नरियाला को 16 मार्च को ही चुनाव आयोग ने नंदिनी चक्रवर्ती की जगह नया मुख्य सचिव बनाया था, ताकि वे निष्पक्ष चुनाव करा सकें। नरियाला के व्यवहार से साफ है कि न्यायिक अधिकारियों को बंधक बनाने के मामले में उनका रवैया तटस्थ नौकरशाह की बजाय राज्य की मौजूदा सत्ता के इशारे पर ही काम करने वाले जैसा रहा।

लोकतंत्र, लोक यानी आम लोगों का तंत्र है। लेकिन हकीकत में यह राजनीतिक दलों का तंत्र है और इस तंत्र में लोक की भूमिका महज वोट देने तक ही सीमित है। इस तंत्र में नौकरशाही की जवाबदेही राजनीति के हर अच्छे-बुरे कामों में साथ देने और कई बार उसका कहार बनने तक सीमित रह गई है। सरदार पटेल जब इस तंत्र को स्टील फ्रेम कह रहे थे, तो उनका आशय यह था कि भावी नौकरशाही आम लोगों की भलाई और लोकतंत्र को मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाएगी। पटेल को उम्मीद रही होगी कि नौकरशाह लोक के प्रति जब जवाबदेह होंगे, तब ऐश्वर्य पर उनकी निगाह कम होगी। लेकिन इसके ठीक उलट हो रहा है। नौकरशाही के बड़े हिस्से को अपनी मूल भूमिका की चिंता नहीं सताती। उसकी पूरी कोशिश खुद और खुद के कैडर को मजूबत करने और ज्यादा सुविधाएं जुटाने पर केंद्रित रहती है। ज्यादातर नौकरशाहों के लिए आमजन ठीक वैसी ही प्रजा हैं, जिस तरह अंग्रेजों के थे। पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव का व्यवहार इसी सोच का उदाहरण है।

जब कोई आईएएस किसी फरियादी की बात सुनने के लिए जमीन पर बैठ जाता है, या ऐसा ही सामान्य कदम उठाता है तो वह घटना खबर बन जाती है। इसकी वजह यही है कि अफसरों से ऐसे व्यवहार की उम्मीद ही नहीं होती। जनमानस की सोच ऐसी है तो यह मान लेना चाहिए कि पटेल की सोच के मुताबिक नौकरशाही विकसित नहीं हुई, बल्कि एचवी कामथ जैसे लोगों की आशंका ही सही साबित हुई है। नौकरशाही में जब भी किसी का चयन होता है, उसके पड़ोसी और रिश्तेदार तक मान लेते हैं कि कुछ ही दिनों में उसकी कई पुश्तों का इंतजाम हो जाएगा। ज्यादातर ऐसा होता भी है। मध्य प्रदेश जैसे कुछ राज्यों ने लोकपाल की व्यवस्था कर रखी है। वहां आए दिन जिस तरह अधिकारियों के घरों से नोटों की गड्डियां निकलती हैं, उनकी संपत्ति के ब्यौरे सामने आते हैं, उससे पता चलता है कि अफसर बनना जमींदारी हासिल करने से भी ज्यादा फायदेमंद है। ऐसे अफसरों पर कड़ी कार्रवाइयां नजीर बननी चाहिए, लेकिन ऐसा होता नहीं दिखता। अफसरशाही का बड़ा हिस्सा अब भी तंत्र के दोहन की प्रक्रिया में शिद्दत से शामिल है। हाल ही में बिहार के एक सब डिविजनल पुलिस अफसर के बारे में समाचार आया कि उनकी नौकरानी भी थार से चलती है। ऐसा नहीं कि नौकरशाही में ईमानदार लोग नहीं हैं। अशोक खेमका और संजीव चतुर्वेदी इसके उदाहरण हैं। लेकिन उन्हें ना तो नौकरशाही चैन से बैठने देती है और ना ही राजनीतिक आका।

नौकरशाही को तटस्थ और ईमानदार बनाए रखने के लिए पचासों कमेटियां बन चुकी हैं, दो प्रशासनिक सुधार आयोग बन चुके हैं। पहले आयोग के अध्यक्ष तत्कालीन वित्त मंत्री मोरारजी देसाई थे तो दूसरे के कांग्रेसी नेता वीरप्पा मोइली। जान लेना चाहिए कि स्वाधीनता संग्राम में कूदने से पहले मोरार जी भी सिविल सेवा के अधिकारी थे। दोनों आयोगों ने कई सुझाव दिए, कुछ लागू भी हुए। लेकिन असल में नौकरशाही का चरित्र नहीं बदल पाया। वह लोकतांत्रिक नहीं हो पाई। आपातकाल के दिनों में जयप्रकाश नारायण ने नौकरशाही और पुलिस अफसरों से अपील की थी कि सरकार के असंवैधानिक आदेशों को वे न मानें। तब जेपी को अराजकतावादी कहा गया। हालांकि राजनीतिक व्यवस्था ऐसी है कि नौकरशाही के लिए राजनीति की बात टालना संभव नहीं हैं। एच वी अयंगार जैसे कुछ ही नौकरशाह होते हैं, जो सही बात कह सकते हैं और अपने राजनीतिक आका से अलग राय रख सकते हैं। राज्यों के गठन के पीछे भाषा को आधार बनाने के तत्कालीन गृह सचिव अयंगार विरोधी थे और उन्होंने अपने मंत्री सरदार पटेल के सामने उसे खुलकर रखा भी था। वैसे आज की राजनीति में पटेल जैसा हृदय रखने वाले लोग भी कम हैं। अव्वल तो आज की नौकरशाही नाफरमानी की हिम्मत ही नहीं करती और अगर ऐसी कोशिश करती भी है तो उसे ही किनारे लगा दिया जाता है। इसी वजह से माना जा रहा है कि दुष्यंत नरियाला फिलहाल भले ही अभी चुनाव आयोग को रिपोर्ट कर रहे हों, वे अपने राजनीतिक आका के ही प्रभाव में हैं।

नौकरशाही अगर लोकतांत्रिक और तटस्थ नहीं बन पाई है तो इसके पीछे उसके प्रशिक्षण और चयन में भी खामी मानी जाती है। वैसे समाज भी रोजाना अफसरों की बेरूखी से दो-चार होता रहता है, इसके बावजूद जब भी यूपीएससी या पीसीएस के नतीजे आते हैं, चयनित अफसरों पर वह लहालोट हो जाता है। समाज का लहालोट होना भी कई बार नौकरशाही को राजा की तरह व्यवहार करने को प्रेरित करता है। इसी लिए कोई दुष्यंत नरियाला कलकत्ता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के फोन को भी नजरंदाज कर देता है। लेकिन सवाल यह है कि आखिर इस रवायत को बदलेगा कौन? जिस राजनीति पर इसकी जवाबदेही है, उसे अपने कार्यकर्ताओं की बनिस्बत नौकरशाही पर भरोसा ज्यादा है। लोक तो उससे प्रताड़ित होने के बावजूद उसी पर लहालोट है। इसलिए जरूरी है कि नौकरशाही को भगवान न मानने वाली सोच विकसित करने की कोशिशें हों, अन्यथा नौकरशाह राजा की तरह व्यवहार करते रहेंगे।

प्रेरणा

सच्ची कला का मूल्य: जब प्रतिबद्धता ने बाज़ार को चुनौती दी

भारतीय सिनेमा और साहित्य की दुनिया में कई ऐसी घटनाएं हैं, जो समय के साथ केवल किस्से नहीं रहतीं, बल्कि एक आदर्श बन जाती हैं। यह कहानी भी ऐसी ही एक घटना को सामने लाती है, जिसमें एक कलाकार ने अपनी रचना की आत्मा को बचाने के लिए हर प्रकार के दबाव को ठुकरा दिया। यह प्रसंग महान गीतकार शैलेंद्र और प्रख्यात कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' से जुड़ा है, जिनकी कहानी पर बनी फिल्म तीसरी कसम आज भी संवेदनशील सिनेमा की मिसाल मानी जाती है।

जब 'तीसरी कसम' बनकर तैयार हुई, तब उसे कुछ फिल्म वितरकों को दिखाया गया। उस दौर में फिल्मों की सफलता का पैमाना मुख्यतः बॉक्स ऑफिस ही हुआ करता था, इसलिए वितरकों की नजर हमेशा इस बात पर रहती थी कि फिल्म दर्शकों को कितनी संतुष्टि देती है और अंत कितना आकर्षक है। फिल्म देखने के बाद वितरकों ने यह राय दी कि इसका अंत काफी उदास है और यदि इसे थोड़ा बदला जाए, तो फिल्म ज्यादा लोगों को पसंद आ सकती है। उनका सुझाव था कि अंत को खुशहाल बनाया जाए, ताकि दर्शक थिएटर से संतोष के साथ बाहर निकलें और फिल्म का व्यापार बेहतर हो सके।

यह सुझाव सुनने में भले ही व्यावहारिक लग रहा था, लेकिन इसके पीछे कला के मूल स्वरूप को बदलने का आग्रह छिपा था। किसी भी कहानी का अंत उसके भाव और संदेश का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। उसे बदलना केवल एक दृश्य को बदलना नहीं, बल्कि पूरी रचना के अर्थ को बदल देना होता है। शैलेंद्र ने इस बात को गहराई से समझा। उन्होंने तुरंत कोई निर्णय लेने के बजाय अपने मित्र 'रेणु' की ओर देखा, जिनकी कहानी इस फिल्म की नींव थी। 'रेणु' के चेहरे पर आई उदासी यह स्पष्ट कर रही थी कि वे इस बदलाव के पक्ष में नहीं हैं।

एक संवेदनशील कलाकार दूसरे कलाकार की चुप्पी में भी बहुत कुछ सुन लेता है। शैलेंद्र ने समझ लिया कि यह केवल एक सुझाव नहीं, बल्कि उनकी रचना की आत्मा पर चोट है। उसी क्षण उन्होंने यह तय कर लिया कि वे किसी भी कीमत पर इस बदलाव को स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने वितरकों से स्पष्ट शब्दों में कहा कि कुछ बातें लाभ-हानि के गणित से परे होती हैं और कला उन्हीं में से एक है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि फिल्म चले या न चले, इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन वे इसकी कहानी में कोई बदलाव नहीं होने देंगे।

यह निर्णय केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि एक गहरी प्रतिबद्धता का परिणाम था। शैलेंद्र जानते थे कि उन्होंने इस फिल्म में अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया है। आर्थिक रूप से भी वे एक कठिन दौर से गुजर रहे थे, और इस फिल्म की सफलता उनके लिए बेहद महत्वपूर्ण थी। इसके बावजूद उन्होंने यह जोखिम उठाया, क्योंकि उनके लिए कला का सम्मान किसी भी आर्थिक लाभ से अधिक महत्वपूर्ण था। उन्होंने यह साबित किया कि सच्चा कलाकार वही होता है, जो परिस्थितियों के दबाव में भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करता।

शैलेंद्र का यह विश्वास था कि सच्ची कला को भले ही तुरंत पहचान न मिले, लेकिन समय उसे उसका उचित स्थान जरूर देता है। उन्होंने भरोसा जताया कि उनकी यह कृति लोगों के दिलों में लंबे समय तक जीवित रहेगी। यह केवल एक आशा नहीं थी, बल्कि अपनी रचना के प्रति उनका अटूट विश्वास था। उन्होंने यह दिखाया कि जब कलाकार अपनी रचना के प्रति ईमानदार रहता है, तो वह किसी भी परिस्थिति में हारता नहीं है।

समय ने उनकी इस सोच को सही साबित किया। 'तीसरी कसम' को भले ही शुरुआत में बड़ी व्यावसायिक सफलता नहीं मिली, लेकिन इसकी संवेदनशीलता, सादगी और सच्चाई ने धीरे-धीरे इसे एक विशेष स्थान दिला दिया। इस फिल्म को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला और इसे सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह इस बात का प्रमाण था कि सच्ची कला को देर से ही सही, लेकिन उसकी पहचान जरूर मिलती है।

आज 'तीसरी कसम' को भारतीय सिनेमा की उन चुनिंदा फिल्मों में गिना जाता है, जिन्हें 'कल्ट क्लासिक' का दर्जा प्राप्त है। इसके गीत, संवाद और भावनात्मक गहराई आज भी लोगों के दिलों को छूते हैं। यह फिल्म केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं का एक जीवंत दस्तावेज है, जो समाज के यथार्थ को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत करती है।

इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि कला का असली मूल्य उसकी सच्चाई में होता है, न कि उसके तात्कालिक लाभ में। जब कलाकार अपनी रचना के प्रति सच्चा रहता है, तो वह केवल एक कृति नहीं बनाता, बल्कि वह एक ऐसी विरासत रचता है, जो पीढ़ियों तक प्रेरणा देती है। शैलेंद्र का यह निर्णय आज भी उन सभी लोगों के लिए एक प्रेरणा है, जो अपने काम में ईमानदारी और समर्पण को महत्व देते हैं।

यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में कई बार ऐसे मौके आते हैं, जब हमें आसान रास्ता चुनने का अवसर मिलता है, लेकिन वही लोग इतिहास बनाते हैं, जो कठिन रास्ते पर चलने का साहस रखते हैं। शैलेंद्र ने अगर उस समय समझौता कर लिया होता, तो शायद 'तीसरी कसम' भी एक सामान्य फिल्म बनकर रह जाती। लेकिन उनके दृढ़ निश्चय ने इसे एक अमर कृति बना दिया।

अंततः, यह प्रसंग केवल एक फिल्म या दो महान व्यक्तित्वों की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस विचार का प्रतीक है कि जब कला और प्रतिबद्धता एक साथ चलती हैं, तो वे समय की सीमाओं को पार कर जाती हैं। यह हमें यह याद दिलाता है कि सच्ची रचनात्मकता कभी समझौता नहीं करती और जो कलाकार अपने सत्य के प्रति ईमानदार रहता है, वही सच्चे अर्थों में अमर हो जाता है।

प्रदेश के विकास का एक्सप्रेस वे बनेगा गंगा एक्सप्रेस वे

उत्तर प्रदेश में अवस्थापना विकास के क्रम में निर्मित गंगा एक्सप्रेस वे आम जनमानस के लिए खुल रहा है जिसे प्रदेश के विकास में मील का पत्थर माना जा रहा है। 594 किलोमीटर लंबा गंगा एक्सप्रेस वे प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र (दिल्ली-एनसीआर) को पूर्वी क्षेत्र से जोड़ने वाला पहला सीधा हाई स्पीड एक्सप्रेस वे है। इस परियोजना पर 36,230 करोड़ की लागत आइ़ है। यह एक्सप्रेस वे मेरठ के बिजौली गाँव से प्रारंभ होकर बुलंदशहर, हापुड़, अमरोहा, शाहजहांपुर, संभल, बंदायू, उन्नाव, हरदोई, प्रतापगढ़, रायबरेली होते हुए प्रयागराज जिले के जुडापुर दांदू गांव तक जाएगा। इस एक्सप्रेस वे के प्रारंभ हो जाने के बाद देश के एक्सप्रेस वे नेटवर्क में यूपी की हिस्सेदारी 60 प्रतिशत हो जाएगी और परियोजनाओं की कुल लंबाई 1910 किमी हो जाएगी। छह लेन का यह एक्सप्रेस वे पूरी तरह ग्रीनफील्ड व एक्सेस-कंट्रोल्ड है। इसमें 3.75 मीटर चौड़ी सर्विस रोड, 17 टोल प्लाजा 8 मुख्य पुल और 381 अंडरपास शामिल हैं। यह भारत का पहला ऐसा एक्सप्रेस है जिस पर होटल, ढाबा और ईवी चार्जिंग स्टेशन से लेकर अस्पताल तक बनाए गए हैं। इस एक्सप्रेस वे पर विश्वस्तरीय फूड चेन और मोटेल तक की सुविधाएं मिलेगी। 594 किमी लंबे इस एक्सप्रेस वे का 80 प्रतिशत निर्माण अडानी इंटरप्राइजेज ने किया है। अडानी ने प्रयागराज से बदायूं तक 464 किमी लंबा एक्सप्रेस वे बनाया है जबकि शेष 20 प्रतिशत आईआरबी इंफ्रास्ट्रक्चर ने बनाया है।

एक्सप्रेस वे मतल्टीनेशनल चेन भी उपलब्ध- एक्सप्रेस वे पर लखनऊ के खानपान और चिकनकारी की झलक दिखाई पड़ेगी। इस वे पर एक बड़ा डाइनिंग फूड एरिया विकसित किया गया है। पहली बार किसी एक्सप्रेस वे पर ट्रक लेन बनाया गया है। मोटेल भी तैयार हो गया है जहां विश्राम के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त कमरे उपलब्ध हैं। स्टारबक्स जैसे बड़े ब्रांड के साथ गंगा भोग ढाबा भी है। इसमें लोकप्रिय मुरथल ढाबे को लाने का भी प्रयास चल रहा है। यहां पर एक ट्रामा सेन्टर भी तैयार किया गया है। एक्सप्रेस वे पर सुविधा केंद्रों में बच्चों के लिए चिल्ड्रन प्ले एरिया भी बनाया गया है जहां बच्चों के खेलने के लिए झूला पार्क भी बनाया गया है।ड्राइवरों के लिए भी अलग-अलग विश्राम एरिया बनाया गया है। हर क्षेत्र में वाहनों के लिए सर्विस सेंटर बनाया गया है। यह एक्सप्रेस वे 12 जिलों को जोड़ते हुए प्रयागराज से मेरठ की दूरी मात्र 6 घंटे में समेट देगा। वाहनों की 120 किमी प्रति घंटा गति, एयर स्ट्रिप, हाईटेक टोल और दुर्घटना रोकने वाली अलर्ट स्ट्रिप्स जैसी आधुनिक सुविधाओं से लैस यह एक्सप्रेस वे प्रदेश की कनेक्टिविटी के परिदृश्य को बदलकर रख देगा।

वायुसेना के लिए भी अहम बनेगा एक्सप्रेस वे- यह एक्सप्रेस वे नागरिकों का सफर आसान बनाने के साथ ही भारतीय वायुसेना की ताकत भी बनने वाला है। एक्सप्रेस वे पर शाहजहांपुर के जलालाबाद में 3.5 किमी की हवाई पट्टी का भी निर्माण किया गया है। आपातकालीन स्थिति व युद्ध होने पर रणनीतिक तौर पर यह हवाई पट्टी लड़ाकू विमानों के उतरने व उड़ान भरने के लिए भी इस्तेमाल की जा सकेगी। इस हवाई पट्टी का निर्माण सभी प्रकार के लड़ाकू व परिवहन विमानों के हिसाब से किया गया है। इस पर राफेल सुखोई-0 एमकेआई मिराज 2000 जगुआर और मिग 29 जैसे लडाकू और सी-130 जे सुपर हरक्यूलिस और एएन -32 जैसे वायुसेना के विमान उतरने के साथ-साथ उड़ान भी भर सकेंगे। इस पर रात में भी लड़ाकू विमानो के उतरने और उड़ान भरने की सुविधा होगी। इसके लिए एक्सप्रेस वे पर प्रीसिज़न अप्रोच लाइंटिंग सिस्टम व उन्नत नेविगेशन सिस्टम का इस्तेमाल किया गया है। साथ ही इाई इंटेसिटी रनवे लाइटिंग का उपयोग किया गया है। हवाई पट्टी की सुरक्षा के लिए 250 से अधिक सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। जो किसी भी आपातकालीन स्थिति पर नज़र रखने के लिए सहायक हैं।

इस एक्सप्रेस वे का संचालन पूरी तरह आरम्भ हो जाने के बाद 12 जिलों के औद्योगिक विकास को गति मिलेगी जिससे क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे तथा पलायन कम होगा। प्रदेश सरकार की योजना इसके किनारे 27 औद्योगिक क्लस्टर बनाने की है जिसके लिए भूमि का अधिग्रहण हो चुका है और आवंटन चल रहा है। इससे रसद आपूर्ति, खाद्य प्रसंस्करण वस्त्र उद्योग और विनिर्माण क्षेत्र को नई ऊर्जा मिलेगी। मेरठ के खेल उद्योग, हापुड़ के हथकरघा, बंदायू के जरी जरदोजी और प्रयागराज के कृषि उत्पादों को अब दिल्ली और पूर्वांचल के बाजारो तक पहुंचना आसान होगा।

प्रमुख विशेषताएं- इस एक्सप्रेस वे की पूरी सड़क पर जल संचयन प्रणाली लगाई गई है ताकि वर्षा का जल सीधे जमीन के अंदर जाए और भूजल स्तर पर बना रहे। यह भारत का सबसे लंबा निरंतर नियंत्रित प्रवेश एक्सप्रेस वे है जहां आवारा पशुओं व स्थानीय यातायत के अनियंत्रित प्रवेश को पूरी तरह से रोका गया है। यह परियोजना टिकाऊ इंजीनियरिंग का एक बेहतरीन उदाहरण है। इसके निर्माण में भारी मात्रा में कोयले की राख का उपयोग किया गया है जो प्रदूषणा कम करने में सहायक है। पहले सभ्यताएं नदियों के किनारे बसती थीं किंतु अब एक्सप्रेस वे के किनारे होती हैं इसे ध्यान मे रखते हुए एक्सप्रेस वे किनारे 18 लाख से अधिक पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा गया है। गंगा एक्सप्रेस वे के निर्माण की गुणवत्ता को एक्सीलेंट रेटिंग मिली है।

विशिष्ट सुरक्षा तकनीक भी- यहां पर विशिष्ट सुरक्षा तकनीक का प्रयोग किया गया है। सड़क के दोनों किनारों पर व्हाइट एलर्ट स्ट्रिप लगाई गई है।

अभियान

आस्था, रहस्य और परंपरा का संगम: ठनठनिया काली मंदिर की अनूठी पहचान

चुनावी हलचल, राजनीतिक नारों और रैलियों के शोरगुल के बीच जब देश की निगाहें पश्चिम बंगाल की ओर टिकी थीं, तभी एक प्राचीन मंदिर ने अचानक पूरे राष्ट्र का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। यह मंदिर है ठनठनिया काली मंदिर, जो अपनी रहस्यमयी परंपराओं, अद्वितीय पूजा-विधि और लगभग तीन सौ वर्षों पुराने इतिहास के कारण विशेष महत्व रखता है। जब नरेंद्र मोदी ने चुनाव प्रचार के अंतिम चरण में यहां आकर पूजा-अर्चना की, तो यह पावन धाम एक बार फिर राष्ट्रीय चर्चा का केंद्र बन गया। यह घटना केवल एक राजनीतिक दौरे तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने उस गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को भी उजागर किया, जो सदियों से इस मंदिर के साथ जुड़ी हुई है।

कोलकाता के हृदय में स्थित यह मंदिर न केवल आस्था का केंद्र है, बल्कि यह तांत्रिक साधना, रहस्य और लोकमान्यताओं का जीवंत प्रतीक भी है। यहां मां काली की पूजा उनके 'सिद्धेश्वरी' स्वरूप में की जाती है, जिसे शक्ति और संरक्षण का अद्वितीय संगम माना जाता है। इस स्वरूप की विशेषता यह है कि इसमें मां को केवल एक देवी के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी ऊर्जा के रूप में देखा जाता है, जो जीवन के हर संघर्ष में अपने भक्तों की रक्षा करती है। यही कारण है कि यहां आने वाले श्रद्धालु केवल दर्शन ही नहीं करते, बल्कि अपनी समस्याओं के समाधान और जीवन में नई दिशा की कामना भी करते हैं।

इस मंदिर की सबसे अनोखी और चर्चित परंपरा है यहां मां को चढ़ाया जाने वाला विशेष भोग। जहां अधिकांश हिंदू मंदिरों में देवी-देवताओं को सात्विक प्रसाद अर्पित किया जाता है, वहीं इस मंदिर में आमिष यानी मांसाहारी भोग चढ़ाने की परंपरा है। यह परंपरा अपने आप में अद्भुत है और लोगों के मन में जिज्ञासा भी उत्पन्न करती है। मान्यता है कि महान संत रामकृष्ण परमहंस ने अपने भक्त केशब चंद्र सेन के स्वास्थ्य लाभ के लिए मां को 'डाब-चिंगड़ी' यानी नारियल और झींगे का प्रसाद अर्पित किया था। इसके बाद से यहां आमिष भोग चढ़ाने की परंपरा स्थापित हो गई, जो आज भी पूरी श्रद्धा और नियमों के साथ निभाई जाती है।

इस परंपरा के पीछे केवल धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि तांत्रिक साधना की गहरी छाप भी दिखाई देती है। तंत्र शास्त्र में मां काली को उस शक्ति के रूप में माना गया है, जो सृष्टि के हर रूप को स्वीकार करती हैं, चाहे वह सात्विक हो या तामसिक। इसलिए यहां की पूजा-विधि में वह समावेशिता दिखाई देती है, जो अन्य स्थानों पर कम ही देखने को मिलती है। यही कारण है कि यह मंदिर साधकों और श्रद्धालुओं दोनों के लिए विशेष महत्व रखता है।

मंदिर का इतिहास भी उतना ही रोचक और रहस्यमय है। माना जाता है कि इसकी स्थापना 1703 के आसपास हुई थी, जब यह स्थान घने जंगलों और श्मशान भूमि से घिरा हुआ था। उस समय उदनारायण ब्रह्मचारी नामक एक तांत्रिक साधक ने भागीरथी नदी के किनारे मां काली की सिद्धेश्वरी रूप में स्थापना की थी। यह स्थान साधना के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता था, क्योंकि तंत्र साधना में श्मशान और एकांत स्थानों का विशेष महत्व होता है। बाद में 1860 में शंकर घोष ने यहां भव्य मंदिर का निर्माण कराया और इसके साथ ही पुष्पेश्वर शिव का आठचाला मंदिर भी बनवाया। आज भी उनके वंशज इस मंदिर की सेवा और देखरेख करते हैं, जो इस परंपरा की निरंतरता का प्रमाण है।

इस मंदिर से जुड़ा एक और रोचक तथ्य इसके नामकरण को लेकर है। कहा जाता है कि पहले यह क्षेत्र घने जंगलों से घिरा हुआ था और यहां मंदिर में लगी घंटियों की आवाज दूर-दूर तक गूंजती थी। इन घंटियों की 'ठन-ठन' की ध्वनि इतनी प्रभावशाली थी कि धीरे-धीरे इस इलाके का नाम ही 'ठनठनिया' पड़ गया। यह नाम आज भी उस प्राचीन ध्वनि और वातावरण की याद दिलाता है, जो कभी इस स्थान की पहचान हुआ करता था। मंदिर की सबसे विशिष्ट बात इसकी मूर्ति है, जो मिट्टी से बनी हुई है। यह परंपरा भी अपने आप में अनोखी है, क्योंकि अधिकांश प्राचीन मंदिरों में पत्थर या धातु की मूर्तियां स्थापित होती हैं। यहां हर वर्ष मां की मूर्ति का पुनः संस्कार किया जाता है, जो यह दर्शाता है कि यहां पूजा केवल स्थिर रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रक्रिया के रूप में होती है। चतुर्भुजा और गहरे काले वर्ण वाली सिद्धेश्वरी देवी के बाएं हाथों में खड्ग और नरकपाल सुशोभित हैं, जो उनके उग्र और शक्तिशाली स्वरूप का प्रतीक हैं। यह रूप भक्तों को यह संदेश देता है कि मां केवल करुणा की प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे अन्याय और अधर्म का संहार करने वाली शक्ति भी हैं। यहां की पूजा-विधि तांत्रिक पद्धति पर आधारित है, जिसमें विशेष मंत्रों, अनुष्ठानों और नियमों का पालन किया जाता है। यह पूजा सामान्य वैदिक पूजा से अलग होती है और इसमें साधक को विशेष अनुशासन और साधना की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि यह मंदिर तंत्र साधना के लिए भी एक महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है।

हर अमावस्या के दिन इस मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। यह दिन मां काली की पूजा के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है और इस अवसर पर हजारों भक्त यहां आकर मां के दर्शन करते हैं। अमावस्या की रात को यहां का वातावरण अत्यंत आध्यात्मिक और ऊर्जा से भरा होता है, जहां भक्ति, श्रद्धा और रहस्य का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इसके अलावा, मंदिर प्रतिदिन भी भक्तों के लिए खुला रहता है, जहां सुबह 6 बजे से 11 बजे तक और दोपहर 3 बजे से शाम 7 बजे तक दर्शन किए जा सकते हैं।

इस मंदिर की लोकप्रियता केवल इसकी परंपराओं और मान्यताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों की आस्था का एक जीवंत केंद्र भी है। यहां आने वाले भक्त यह मानते हैं कि मां सिद्धेश्वरी उनकी हर मनोकामना पूरी करती हैं और उन्हें जीवन के कठिन समय में शक्ति प्रदान करती हैं। यही कारण है कि यहां से कोई भी श्रद्धालु खाली हाथ नहीं लौटता, बल्कि अपने साथ एक नई उम्मीद और विश्वास लेकर जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यहां पूजा करने के बाद इस मंदिर की चर्चा पूरे देश में और भी बढ़ गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत की आध्यात्मिक विरासत आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रभावशाली है, जितनी सदियों पहले थी। यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि यह उस सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है, जो भारत की पहचान को दुनिया भर में विशिष्ट बनाती है।

अंततः, ठनठनिया काली मंदिर केवल एक आस्था का केंद्र नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी जीवंत परंपरा का प्रतीक है, जिसमें इतिहास, रहस्य, तंत्र और भक्ति का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। यह हमें यह भी सिखाता है कि आस्था केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह एक ऐसा अनुभव है, जो मन, आत्मा और जीवन को एक नई दिशा देता है। यही कारण है कि यह प्राचीन मंदिर आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने स्थापना काल में था, और आने वाले समय में भी यह श्रद्धालुओं के लिए आस्था और विश्वास का केंद्र बना रहेगा।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

गर्मी की छुट्टियों में मनोरंजन के साथ-साथ विज्ञान भी सीखेंगे गुजरात के बच्चे, 'गुजकोस्ट' द्वारा समर साइंस कैंप 2026 का आयोजन

▸▸ राज्य में स्थित चार क्षेत्रीय विज्ञान केंद्रों में 1 से 30 मई, 2026 के दौरान विभिन्न बैच में 3 दिवसीय समर साइंस कैंप आयोजित होंगे

▸▸ कक्षा 6 से 10 के छात्रों के लिए आयोजित इस समर कैंप में विज्ञान आधारित 5 आकर्षक थीम को कवर किया जाएगा

▸▸ समर कैंप में छात्रों को नमो सरस्वती विज्ञान साधना और मुख्यमंत्री ज्ञान साधना योजना के बारे में जानकारी दी जाएगी

गांधीनगर : गुजरात सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत कार्यरत संस्थान गुजरात काउंसिल ऑन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (GUJCOST-गुजकोस्ट) राज्य भर में विज्ञान विषय की शिक्षा और विज्ञान के प्रति जागरूकता पैदा करने के साथ ही नवाचार को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है। राज्य के आम लोगों, विशेषकर छात्रों में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के प्रति रुचि बढ़ाने और समझ विकसित करने के उद्देश्य से गुजकोस्ट द्वारा पाटण, भावनगर, राजकोट और भुज में क्षेत्रीय विज्ञान केंद्रों (आरएससी) की स्थापना की गई है। ये केंद्र आज विज्ञान विषय की जिज्ञासा को शांत करने तथा व्यावहारिक शिक्षा एवं साइंस टूरिज्म के वाइब्रेंट केंद्र के रूप में उभरे हैं।

गुजकोस्ट ने गर्मियों की छुट्टियों को बच्चों के लिए और आकर्षक बनाने तथा उन्हें मनोरंजन के साथ विज्ञान की शिक्षा देने के लिए एक नई पहल की है। विज्ञान विषय में रुचि रखने वाले बच्चों के साथ-साथ अन्य बच्चों में भी विज्ञान के प्रति दिलचस्पी पैदा करने के उद्देश्य से गुजकोस्ट ने आगामी 1 से 30 मई के दौरान राज्य में स्थित चारों क्षेत्रीय विज्ञान केंद्रों में अलग-अलग बैच में 3 दिवसीय रेजिडेंशियल समर साइंस कैंप का आयोजन किया है। इस समर कैंप को कक्षा 6 से 10 के छात्रों के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें प्रत्येक बैच में अधिकतम 50 छात्र शामिल हो सकते हैं। इस कैंप के दौरान विज्ञान आधारित पांच आकर्षक थीम को कवर किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विज्ञान और आविष्कार की भूमिका पर बल देते हुए 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान' का अपडेटेड राष्ट्रीय नारा दिया है। उन्होंने कहा है, "विज्ञान भारत के भविष्य के विकास और नवाचार के केंद्र में है। विज्ञान आविष्कार, क्रमिक विकास और नवाचार का आधार है।" मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी इस बात पर ध्यान केंद्रित किया है कि गुजरात के अधिक से अधिक छात्रों की विज्ञान में दिलचस्पी पैदा हो। आज, जब गुजरात सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा और डिजिटल साइंस जैसे क्षेत्रों का हब बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब भविष्य में इन क्षेत्रों के लिए कुशल तकनीकी कार्यबल की बड़े पैमाने पर मांग पैदा होगी। इसके लिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक छात्र कक्षा 11 और 12 में विज्ञान संकाय का चुनाव करें। गुजकोस्ट द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन यह सुनिश्चित करेगा कि राज्य के अधिक से अधिक छात्र विज्ञान विषय में रुचि लें और आगे जाकर इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने के बारे में सोचें।

समर साइंस कैंप 2026 में पांच आकर्षक थीम को कवर किया जाएगा

कक्षा 6 से 10 के छात्रों के लिए आयोजित किए गए इस समर कैंप में छात्रों के लिए रुचिकर पांच आकर्षक थीमों को कवर किया गया है। इनमें वैज्ञानिक कैसे बनें, स्पेस (अंतरिक्ष) समर कैंप, मरीन बायोलॉजी/मशीन इंजीनियरिंग, एआई और रोबोटिक्स तथा एक्सप्लोरिंग नेचर यानी प्रकृति के तत्वों की खोज जैसी थीमें शामिल हैं।

समर साइंस कैंप के दौरान छात्रों के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया है, जिनमें व्यावहारिक प्रयोग, विज्ञान प्रदर्शनी, मल्टीमीडिया सत्र, नाइट स्काई ऑब्जर्वेशन (रात्रिकालीन खगोलीय अवलोकन), फील्ड विजिट, क्विज प्रतियोगिता, विज्ञान से जुड़े खेल और वॉक-थ्रू इन गैलरी आदि शामिल हैं। ये गतिविधियां बच्चों को मनोरंजन के साथ विज्ञान से परिचित कराएंगी।

छात्रों को दी जाएगी नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना के बारे में जानकारी

समर साइंस कैंप के दौरान छात्रों को विज्ञान विषय के विशेषज्ञों के साथ बातचीत और चर्चा करने का भी अवसर मिलेगा। इसके अलावा, कैंप के दौरान बच्चों को नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना, मुख्यमंत्री ज्ञान साधना मेरिट स्कॉलरशिप योजना और मुख्यमंत्री ज्ञान सेतु मेरिट स्कॉलरशिप योजना जैसी राज्य सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी के साथ-साथ भावी करियर के लिए मार्गदर्शन भी दिया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि राज्य के छात्रों को कक्षा 11 और 12 में विज्ञान संकाय में अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार ने नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना लागू की है। राज्य के सरकारी या अनुदानित स्कूलों में कक्षा 5 की पढ़ाई पूरी करने वाले 2,00,000 प्रतिभाशाली छात्रों के लिए विभिन्न स्कूलों में कक्षा 6 से 12 तक अध्ययन करने के लिए स्कॉलरशिप देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ज्ञान सेतु मेरिट स्कॉलरशिप योजना तथा राज्य के सरकारी या शिक्षा का अधिकार (आरटीई) के तहत निजी स्कूलों में कक्षा-1 से 8 तक पढ़ाई पूरी करने वाले 1,00,000 प्रतिभाशाली छात्रों के लिए विभिन्न स्कूलों में कक्षा 9 से 12 तक अध्ययन करने के लिए स्कॉलरशिप देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ज्ञान साधना मेरिट स्कॉलरशिप योजना लागू की गई है। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य राज्य के छात्रों को आर्थिक रूप से मदद करना है, ताकि आर्थिक तंगी के कारण किसी भी छात्र की शिक्षा अधूरी न रह जाए।

गुजकोस्ट द्वारा समर साइंस कैंप की इस पहल का उद्देश्य छात्रों में सृजनात्मकता बढ़ाना, स्टेम (एसटीईएम- साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथ्स) करियर को बढ़ावा देना तथा छात्रों और विज्ञान के बीच एक स्थायी संबंध स्थापित करना है। इस कैंप में छात्रों को 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। कैंप में हिस्सा लेने के इच्छुक छात्र और उनके अभिभावक अपने क्षेत्र के निकट स्थित क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

जम्मू मण्डल में इंजीनियरिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

उत्तर रेलवे के जम्मू मण्डल में इंजीनियरिंग कार्य के कारण अहमदाबाद मण्डल से चलने/गुजरने वाली कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। विवरण निम्नानुसार हैः

शॉर्ट ओरिजिनेट/शॉर्ट टर्मिनेट ट्रेनें

▸▸ ट्रेन संख्या 19415 साबरमती–श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस 31 मई 2026 तक अमृतसर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट (समाप्त) होगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 19416 श्री माता वैष्णो देवी कटरा–साबरमती एक्सप्रेस 02 जून 2026 तक अमृतसर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट (प्रारम्भ) होगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 19223 साबरमती–जम्मू तवी एक्सप्रेस 14 जून 2026 तक फिरोजपुर केंट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट (समाप्त) होगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 19224 जम्मू तवी–साबरमती एक्सप्रेस 15 जून 2026 तक फिरोजपुर केंट स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट (प्रारम्भ) होगी।

पूर्णतः निरस्त ट्रेनें

▸▸ ट्रेन संख्या 19107 भावनगर टर्मिनस-एमसीटीएम ऊधमपुर जन्मभूमि एक्सप्रेस 31 मई 2026 तक पूर्णतः निरस्त रहेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 19108 एमसीटीएम ऊधमपुर–भावनगर टर्मिनस जन्मभूमि एक्सप्रेस 01 जून 2026 तक पूर्णतः निरस्त रहेगी।

ट्रेनों के ठहराव, संरचना एवं समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

धूप से निखार तक: सन टैन हटाने के असरदार घरेलू उपाय -शहनाज़ हुसैन

गर्मियों की तेज धूप त्वचा पर सबसे पहले असर दिखाती है और यही वजह है कि इस मौसम में सन टैन एक आम समस्या बन जाती है। सूरज की अल्ट्रावायलेट किरणें, धूल-प्रदूषण और पसीना मिलकर त्वचा की रंगत को प्रभावित करते हैं, जिससे चेहरा सांवला, बेजान और थका हुआ दिखने लगता है। कई लोग इससे बचने के लिए महंगे कॉस्मेटिक उत्पादों का सहारा लेते हैं, लेकिन अक्सर ये हर स्किन टाइप के लिए उपयुक्त नहीं होते। ऐसे में प्राकृतिक और घरेलू उपाय न केवल सुरक्षित होते हैं, बल्कि लंबे समय तक त्वचा को पोषण भी देते हैं। भारतीय ब्यूटी एक्सपर्ट शहनाज़ हुसैन भी हमेशा प्राकृतिक उपायों को प्राथमिकता देने की सलाह देती रही हैं।

पपीता सन टैन हटाने के लिए बेहद प्रभावी माना जाता है। इसमें मौजूद एंजाइम त्वचा की डेड सेल्स को हटाकर उसे चमकदार बनाते हैं। पके हुए पपीते को मैश करके उसमें कुछ बूंदें नींबू की मिलाकर चेहरे पर लगाने से धीरे-धीरे टैन कम होने लगता है। यदि इसमें शहद मिला दिया जाए तो यह त्वचा को नमी भी देता है और चेहरा मुलायम बनता है। नियमित इस्तेमाल से त्वचा में प्राकृतिक ग्लो लौट आता है। नींबू प्राकृतिक ब्लीच की तरह काम करता है। एक चम्मच नींबू का रस, शहद और दूध मिलाकर बनाया गया फेस पैक त्वचा की रंगत निखारने में मदद करता है। दूध में मौजूद पोषक तत्व त्वचा को टोन करते हैं, जबकि शहद उसे हाइड्रेट रखता है। वहीं नींबू और चीनी का मिश्रण हल्के स्क्रब की तरह काम करता है, जो मृत कोशिकाओं को हटाकर नई त्वचा को उभरने का मौका देता है। लेकिन ध्यान रखें कि नींबू का उपयोग संवेदनशील त्वचा पर सावधानी से करें।

खीरा गर्मियों का सबसे ठंडक देने वाला प्राकृतिक उपाय है। इसमें भरपूर पानी होता है, जो त्वचा को हाइड्रेट करता है और जलन को शांत करता है। खीरे का रस, गुलाब जल और नींबू मिलाकर कॉटन से चेहरे पर लगाने से टैन धीरे-धीरे हल्का होने लगता है। इसके अलावा खीरे, पपीते, दही और ओट्स का मिश्रण भी त्वचा को गहराई से साफ करता है और उसे मुलायम बनाता है।

जई यानी ओट्स भी त्वचा की सफाई और टैन हटाने में मददगार हैं। जई के आटे में मठा मिलाकर लगाया गया पेस्ट त्वचा की गंदगी को हटाता है और उसे फ्रेश बनाता है। यह खासतौर पर उन लोगों के लिए फायदेमंद है जिनकी त्वचा पर धूप का असर ज्यादा होता है।

केला, शहद और ऑलिव ऑयल का मिश्रण त्वचा को पोषण देने के साथ-साथ उसकी रंगत सुधारने में भी मदद करता है। केला त्वचा को सॉफ्ट बनाता है, शहद नमी बनाए रखता है और ऑलिव ऑयल त्वचा को गहराई से पोषण देता है। यह पैक सूखी त्वचा वालों के लिए खासतौर पर लाभकारी है।

एलोवेरा त्वचा के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। इसमें मौजूद गुण त्वचा को ठंडक देते हैं और टैन को धीरे-धीरे कम करते हैं। एलोवेरा जेल में हल्दी और शहद मिलाकर लगाने से त्वचा साफ और चमकदार बनती है। अगर रोजाना सिर्फ एलोवेरा जेल भी लगाया जाए तो त्वचा की रंगत में सुधार दिखने लगता है।

बेसन और दही का पारंपरिक नुस्खा भी आज तक उतना ही असरदार है। इसमें हल्दी मिलाकर लगाने से त्वचा की गहराई से सफाई होती है और टैन कम होता है। यह मिश्रण त्वचा को प्राकृतिक तरीके से निखार देता है और किसी तरह का साइड इफेक्ट भी नहीं होता। कुछ लोग शहद, संतरे का रस और अंडे के सफेद हिस्से का फेस पैक भी इस्तेमाल करते हैं। यह त्वचा को टाइट करने के साथ-साथ उसे ग्लोइंग बनाता है। वहीं दही और नींबू का मिश्रण भी त्वचा को साफ और फ्रेश रखने में मदद करता है।

आलू का रस भी टैन हटाने में काफी लोकप्रिय घरेलू उपाय है। इसमें प्राकृतिक ब्लीचिंग गुण होते हैं, जो त्वचा के दाग-धब्बों और टैन को हल्का करने में सहायक होते हैं। कद्दूकस किए हुए आलू का रस चेहरे पर लगाकर कुछ देर बाद धोने से त्वचा साफ और चमकदार दिखने लगती है।

इन सभी उपायों के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि आप धूप में निकलते समय अपनी त्वचा की सुरक्षा का ध्यान रखें। हल्के कपड़े, स्कार्फ, सनस्क्रीन और पर्याप्त पानी का सेवन आपकी त्वचा को अंदर और बाहर दोनों तरह से सुरक्षित रखता है। घरेलू नुस्खे तभी असर दिखाते हैं जब उन्हें नियमित रूप से अपनाया जाए और त्वचा के अनुसार सही उपाय चुना जाए।

गर्मियों में सन टैन से पूरी तरह बचना मुश्किल जरूर है, लेकिन सही देखभाल और प्राकृतिक उपायों की मदद से इसे कम किया जा सकता है। ये घरेलू नुस्खे न केवल आपकी त्वचा को टैन से राहत देते हैं, बल्कि उसे स्वस्थ, मुलायम और प्राकृतिक रूप से खूबसूरत भी बनाते हैं।

गुजरात से 73 लाख से अधिक यात्रियों ने वंदे भारत ट्रेनों में किया सफर

महिलाओं की रही पहली पसंद, 722 करोड़ से अधिक का राजस्व किया अर्जित

भारतीय रेलवे की प्रीमियम सेमी-हाईस्पीड सेवा वंदे भारत एक्सप्रेस ने देश में आधुनिक रेल यात्रा की नई पहचान स्थापित की है। फरवरी 2019 में एक सेवा से शुरू होकर आज यह नेटवर्क देशभर में 162 से अधिक ट्रेनों तक विस्तारित हो चुका है, जो प्रमुख शहरों को तेज, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा से जोड़ रहा है।

गुजरात से संचालित वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों ने यात्रियों के बीच विशेष लोकप्रियता हासिल की है। 1 अक्टूबर 2022 से 31 मार्च 2026 तक की अवधि में राज्य से संचालित 6 जोड़ी वंदे भारत ट्रेनों में लगभग 73 लाख यात्रियों ने यात्रा की, जबकि इनसे कुल 722 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ है।

गुजरात से 6 संचालित वंदे भारत ट्रेनों का विवरण (आरंभ तिथि सहित)

▸▸ मुंबई सेंट्रल – गांधीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस : सेवा प्रारंभ 01 अक्टूबर 2022

▸▸ साबरमती – जोधपुर वंदे भारत एक्सप्रेस : सेवा प्रारंभ 09 जुलाई 2023

▸▸ अहमदाबाद – ओखा वंदे भारत एक्सप्रेस : सेवा प्रारंभ 25 सितंबर 2023

▸▸ मुंबई सेंट्रल – अहमदाबाद वंदे भारत एक्सप्रेस : सेवा प्रारंभ 13 मार्च 2024

▸▸ साबरमती – वेरावल वंदे भारत एक्सप्रेस : सेवा प्रारंभ 27 मई 2025

▸▸ असारवा – उदयपुर वंदे भारत एक्सप्रेस : सेवा प्रारंभ 18 फरवरी 2026

अहमदाबाद–मुंबई मार्ग पर दोनों वंदे भारत सेवा यात्रियों की पहली पसंद बन चुकी है। पेशेवर, व्यवसायिक तथा नियमित यात्री इस सेवा का व्यापक रूप से उपयोग कर रहे हैं। इन सेवाओं में न केवल यात्रियों की संख्या में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है, बल्कि कई मार्गों पर मांग क्षमता से कहीं अधिक, 140% तक ऑक्यूपेंसी दर्ज की गई है, यह लोकप्रियता को दर्शाती है। कुछ मार्गों पर ऑक्यूपेंसी 100% से अधिक रही है, जबकि कुछ ट्रेनों की ऑक्यूपेंसी 90% से अधिक रही है।

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित ट्रेनें

'मेक इन इंडिया' पहल के अंतर्गत निर्मित वंदे भारत ट्रेनें अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस हैं, जिनमें शामिल हैं:

▸▸ स्वचालित दरवाजे एवं जीपीएस आधारित यात्री सूचना प्रणाली

▸▸ आरामदायक रीक्लाइनिंग सीटें एवं पर्याप्त लेगरूम

▸▸ मोबाइल चार्जिंग पॉइंट एवं ऑनबोर्ड इन्फोटेनमेंट

▸▸ पूर्ण सीसीटीवी कवरेज एवं बायो-वैक्यूम शौचालय

▸▸ दिव्यांगों के लिए अलग से शौचालय

▸▸ ट्रेन में अग्निशामक यंत्र और फायर अलार्म की व्यवस्था

▸▸ उत्कृष्ट खान-पान एवं सेवाएं

यात्रियों को उच्च गुणवत्ता की ऑनबोर्ड सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिनमें:

▸▸ स्वच्छ एवं ताज़ा भोजन

▸▸ क्षेत्रीय स्वाद पर आधारित विविध मेन्यू

▸▸ प्री-पैक्ड हाइजीनिक सेवा

▸▸ प्रशिक्षित स्टाफ द्वारा समयबद्ध सेवा

उच्च समयपालन, बेहतर सुरक्षा मानक एवं उत्कृष्ट स्वच्छता के कारण यात्रियों का विश्वास लगातार मजबूत हुआ है। तेज गति और कम यात्रा समय के कारण ये ट्रेनें व्यवसायिक एवं अवकाश यात्रियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

गुजरात में वंदे भारत एक्सप्रेस की यह उल्लेखनीय सफलता भारतीय रेल के यात्री-केंद्रित दृष्टिकोण का सशक्त प्रमाण है। भारतीय रेल भविष्य में भी यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक एवं विश्वस्तरीय यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अमृत भारत स्टेशन ने बदली भारतीय रेल की तस्वीर, इंफ्रा के कार्यों ने बढ़ाई रेल की गति

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कुशल मार्गदर्शन में वडोदरा मंडल के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान इंजीनियरिंग, ट्रैक अनुरक्षण, संरचना सुदृढ़ीकरण तथा यात्री सुविधाओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वडोदरा मंडल के 5 स्टेशनों का उद्घाटन किया गया। मंडल द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों से न केवल रेल संचालन में संरक्षा और विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है, बल्कि यात्रियों को भी बेहतर एवं आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

वरिष्ठ मंडल अभियंता (समन्वय) श्री सुमित ठाकुर ने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 22 मई, 2025 को 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 86 जिलों में 1,100 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 103 अमृत भारत स्टेशनों का वर्चुअल उद्घाटन किया गया, जिसमें वडोदरा मंडल के 5 स्टेशन उत्राण, कोसंबा, डेरोल, डाकोर और करमसद शामिल रहे। इन स्टेशनों पर भव्य प्रवेश द्वार, आकर्षक फसाड, हाई मास्ट लाइटिंग, आधुनिक प्रतीक्षालय, टिकट काउंटर, मॉडर्न टॉयलेट और दिव्यांगजन के लिए सुगम रैंप जैसी सुविधाएं विकसित की गयी है। प्रतापनगर और गोधरा स्टेशन भी अमृत भारत स्टेशन के लिए तैयार है।

वर्ष 2025-26 में वडोदरा मंडल पर संरक्षा को मजबूती देते हुए लेवल क्रासिंग को समाप्त कर 5 रोड ओवर ब्रिज (ROB) तथा 3 रोड अंडर ब्रिज (RUB) का निर्माण किया गया।

ट्रैक कार्यों के अंतर्गत 169.189 यूनिट कम्प्लीट ट्रैक रिन्यूअल (CTR), 192.128 ट्रैक किलोमीटर थ्रू रेल रिन्यूअल (TRR) तथा 118.291 ट्रैक किलोमीटर थ्रू स्लीपर रिन्यूअल (TSR) कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किए हैं।

ब्रिज कार्यों के अंतर्गत 15 पुलों का पुनर्वास, 5 पुलों का री-गर्डरिंग तथा 33 पुलों पर एप्रोच ट्रांजिशन कार्य किए गए हैं। इसके अतिरिक्त 906 स्टील चैनल स्लीपरों का नवीनीकरण किया गया है, जिससे पुलों की संरचनात्मक मजबूती सुनिश्चित हुई है।

स्टेशनों यार्ड सुधार कार्यों के अंतर्गत 9 यार्डों में 14 लेआउट का सुधार किया गया, 972 टर्नआउट का मानकीकरण किया गया तथा विभिन्न तकनीकी उन्नयन कार्य जैसे TWS और WCMSC का समावेशन किया गया। 68 यार्डों में PRL लाइनों का उन्नयन किया गया तथा 2472 स्थानों पर फ्री जॉइंट्स का उन्मूलन किया गया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप ऑस्सिलेशन मॉनिटरिंग सिस्टम (OMS) में 0.15g से अधिक मान में 93.25% की उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है, जिससे ट्रैक की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

डेरोल स्टेशन पर 12 मीटर चौड़ा फुट ओवर ब्रिज (FOB) तैयार किया गया है तथा अन्य 8 स्टेशनों पर भी 12 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज (FOB) के विकास कार्य प्रगति पर हैं। मंडल ने 20 प्लेटफार्मों का विस्तार एवं उन्नयन, 13 स्टेशनों पर कोचिंग ऑपरेशन पैनल (COP) की सुविधा, 3 नए 06 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज FOB का निर्माण तथा 9 स्टेशनों पर कवर शेड का निर्माण किया है। इसके अलावा स्टेशनों पर स्वचालित सीढ़ी, लिफ्ट, रैंप, भूमिगत मार्ग आदि, 47 स्टेशनों को दिव्यांगजन अनुकूल बनाया गया है और स्टाफ के लिए 104 नए रेलवे आवासों का निर्माण किया गया है।

इन सभी प्रयासों के माध्यम से वडोदरा मंडल ने रेलवे अवसंरचना को सुदृढ़ करते हुए सुरक्षित, तेज एवं आरामदायक रेल सेवाएं प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। पश्चिम रेलवे भविष्य में भी इसी प्रकार की विकासात्मक पहलों के माध्यम से यात्रियों की सुविधाओं और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता रहेगा।

पश्चिम रेलवे चलाएगी हावड़ा के लिए चार वन-वे स्पेशल ट्रेनें

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की मांग एवं सुविधा के लिए भुज, साबरमती, वटवा एवं राजकोट से हावड़ा के के लिए चार वन वे स्पेशल ट्रेनें विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

1.ट्रेन संख्या 09401 भुज – हावड़ा वन-वे स्पेशल

ट्रेन संख्या 09401 भुज–हावड़ा जंक्शन वन-वे स्पेशल दिनांक 30 अप्रैल 2026 (गुरुवार) को भुज से 15:30 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन 17:25 बजे हावड़ा जंक्शन पहुंचेगी।

यह ट्रेन मार्ग में गांधीधाम, भचाऊ, पालनपुर, आबू रोड, अजमेर, जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, इदगाह आगरा, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी, सूबेदारगंज, मिर्जापुर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, बक्सर, आरा, दानापुर, पटना, बख्तियारपुर, मोकामा, किउल, अभयपुर, जमालपुर, शिवसागर रोड, भागलपुर, कहलगाँव, साहिबगंज, न्यू फरक्का, मालदा टाउन,आजीमगंज, कटवा,नवद्वीप धाम एवं बैंडेल स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में स्लीपर,द्वितीय श्रेणी चेयरकार तथा सामान्य श्रेणी कोच रहेंगे।

2. ट्रेन संख्या 09403 साबरमती – हावड़ा वन-वे स्पेशल

ट्रेन संख्या 09403 साबरमती–हावड़ा जंक्शन वन-वे स्पेशल दिनांक 01 मई 2026 (शुक्रवार) को साबरमती से 18:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन 16:15 बजे हावड़ा जंक्शन पहुंचेगी।

यह ट्रेन मार्ग में महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, अजमेर, जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, इदगाह आगरा, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी, सूबेदारगंज, मिर्जापुर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, बक्सर, आरा, दानापुर, पटना, बख्तियारपुर, मोकामा, किउल, अभयपुर, जमालपुर, शिवसागर रोड, भागलपुर, कहलगाँव, साहिबगंज, न्यू फरक्का, मालदा टाउन,आजीमगंज, कटवा,नवद्वीप धाम एवं बैंडेल स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में स्लीपर,द्वितीय श्रेणी चेयरकार तथा सामान्य श्रेणी कोच रहेंगे।

3. ट्रेन संख्या 09481 वटवा – हावड़ा वन-वे स्पेशल

ट्रेन संख्या 09481 वटवा–हावड़ा वन-वे समर स्पेशल दिनांक 01 मई 2026 (शुक्रवार) को वटवा से 16:45 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन 10:00 बजे हावड़ा पहुंचेगी।

यह ट्रेन छायापुरी, गोधरा, रतलाम, उज्जैन, संत हिरदाराम नगर, बिना, वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी, कानपुर सेंट्रल, प्रयागराज, ज्ञानपुर रोड, बनारस, वाराणसी, दीनदयाल उपाध्याय, सासाराम, गया, कोडरमा, धनबाद, आसनसोल तथा दुर्गापुर स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में स्लीपर,द्वितीय श्रेणी चेयरकार तथा सामान्य श्रेणी कोच रहेंगे।

4. ट्रेन संख्या 09501 राजकोट – हावड़ा वन-वे स्पेशल

ट्रेन संख्या 09501 राजकोट–हावड़ा जंक्शन वन-वे स्पेशल दिनांक 30 अप्रैल 2026 (गुरुवार) को राजकोट से 17:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन 19:10 बजे हावड़ा जंक्शन पहुंचेगी।

यह ट्रेन मार्ग में वांकानेर, सुरेंद्रनगर, महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, अजमेर, जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, इदगाह आगरा, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी, सूबेदारगंज, मिर्जापुर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, बक्सर, आरा, दानापुर, पटना, बख्तियारपुर, मोकामा, किउल, अभयपुर, जमालपुर, शिवसागर रोड, भागलपुर, कहलगाँव, साहिबगंज, न्यू फरक्का, मालदा टाउन,आजीमगंज, कटवा,नवद्वीप धाम एवं बैंडेल स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में स्लीपर,द्वितीय श्रेणी चेयरकार तथा सामान्य श्रेणी कोच रहेंगे।

ट्रेनों के समय, ठहराव एवं संरचना संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

एग्जिट पोल के उलझे संकेत: कहीं 'कमल' की बढ़त, कहीं वापसी की उम्मीद, नतीजों से पहले सियासी सस्पेंस चरम पर

कोलकाता। पांच राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में हुए विधानसभा चुनावों के एग्जिट पोल सामने आते ही देशभर की राजनीति में हलचल तेज हो गई है। आंकड़े इतने उलझे हुए हैं कि तस्वीर साफ होने के बजाय और धुंधली हो गई है। कहीं भारी बहुमत के दावे हैं तो कहीं वापसी की उम्मीदें, और कुछ जगहों पर त्रिकोणीय मुकाबले ने पूरी कहानी को ही अनिश्चित बना दिया है। यही वजह है कि राजनीतिक दलों से लेकर आम जनता तक, सभी की नजरें अब 4 मई को होने वाली मतगणना पर टिक गई हैं, जो इन तमाम दावों और अनुमानों की असली परीक्षा होगी।

सबसे ज्यादा चौंकाने वाली तस्वीर पश्चिम बंगाल से सामने आई है, जहां एग्जिट पोल पूरी तरह बंटे हुए नजर आ रहे हैं। आठ प्रमुख सर्वे में से छह में भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिलता दिख रहा है। ये आंकड़े संकेत दे रहे हैं कि लंबे समय से सत्ता पर काबिज तृणमूल कांग्रेस को इस बार सत्ता से बाहर होना पड़ सकता है। कुछ सर्वे तो भाजपा को 178 से 200 से अधिक सीटें तक दे रहे हैं, जो राज्य में एक बड़े राजनीतिक बदलाव का संकेत माना जा रहा है। लेकिन इसी तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। दो एग्जिट पोल ऐसे हैं जो पूरी तरह अलग कहानी पेश कर रहे हैं और तृणमूल कांग्रेस की शानदार वापसी का दावा कर रहे हैं। इन सर्वे में ममता बनर्जी की पार्टी को 180 से अधिक सीटें मिलने का अनुमान जताया गया है। इन विरोधाभासी आंकड़ों ने बंगाल को सबसे रोमांचक और अनिश्चित मुकाबले में बदल दिया है, जहां किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी।

दक्षिण भारत में तमिलनाडु की तस्वीर भी कम दिलचस्प नहीं है। यहां के एग्जिट पोल एक तरह से सियासी पहेली बन गए हैं। ज्यादातर सर्वे द्रविड़ मुनेत्र कड़गम गठबंधन की वापसी का दावा कर रहे हैं और उसे बहुमत के पार दिखा रहे हैं। लेकिन कुछ सर्वे पूरी तरह उलट तस्वीर पेश

कर रहे हैं और एनडीए को बढ़त देते दिखा रहे हैं। इस सबके बीच सबसे बड़ा ट्विस्ट अभिनेता विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम ने दिया है। कुछ एग्जिट पोल में यह पार्टी इतनी मजबूत स्थिति में दिखाई गई है कि वह 'किंगमेकर' ही नहीं, बल्कि सबसे बड़ी पार्टी बनकर भी उभर सकती है। खासकर कुछ सर्वे में टीवीके को 90 से अधिक सीटों का अनुमान दिया गया है, जिससे यह साफ है कि तमिलनाडु में इस बार मुकाबला परंपरागत दलों से आगे निकलकर एक नए राजनीतिक समीकरण की ओर बढ़ सकता है।

पूर्वोत्तर में असम की तस्वीर अपेक्षाकृत साफ नजर आ रही है। यहां सभी 11 एग्जिट पोल एक सुर में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन की प्रचंड जीत का दावा कर रहे हैं। 126 सीटों वाली विधानसभा में लगभग हर सर्वे भाजपा को 80 से ज्यादा सीटें दे रहा है, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि राज्य में सत्ता परिवर्तन की कोई संभावना नहीं है। विपक्षी दल, खासकर कांग्रेस, इन आंकड़ों में काफी पीछे नजर आ रही है और कई सर्वे में उसे 25 से 35 सीटों के बीच सिमटता दिखाया गया है। इन रुझानों से यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि असम में भाजपा की पकड़ और मजबूत हो सकती है।

वहीं केरल में बदलाव की लहर नजर आ रही है। आठ में से सात एग्जिट पोल यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट की वापसी का संकेत दे रहे हैं। यह गठबंधन कांग्रेस के नेतृत्व में चुनाव मैदान में है और सर्वे के अनुसार उसे स्पष्ट बहुमत मिल सकता है। दूसरी ओर, सत्ताधारी लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट को इस बार नुकसान उठाना पड़ सकता है। अधिकांश सर्वे एलडीएफ को बहुमत से काफी पीछे दिखा रहे हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि केरल की जनता इस बार सत्ता परिवर्तन के मूड में हो सकती है।

केंद्र शासित प्रदेश पुदुचेरी में तस्वीर लगभग साफ मानी जा रही है। यहां के सभी प्रमुख एग्जिट पोल राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को स्पष्ट बहुमत देते नजर आ रहे हैं। कई सर्वे में एनडीए को 20 से अधिक सीटें मिलने का अनुमान है, जो उसे आसानी से सरकार बनाने की स्थिति में पहुंचाता है। कांग्रेस गठबंधन यहां काफी पीछे नजर आ रहा है और अन्य दलों का प्रभाव भी सीमित दिख रहा है।

इन सभी राज्यों के एग्जिट पोल एक साथ देखने पर यह स्पष्ट होता है कि देश की राजनीति इस समय एक बेहद दिलचस्प मोड़ पर खड़ी है। जहां कुछ राज्यों में सत्ता परिवर्तन की संभावनाएं प्रबल हैं, वहीं कुछ जगहों पर मौजूदा सरकारों की वापसी लगभग तय मानी जा रही है। लेकिन सबसे अहम बात यह है कि एग्जिट पोल के ये आंकड़े अंतिम नहीं होते। पिछले कई चुनावों में यह देखा गया है कि एग्जिट पोल और वास्तविक नतीजों में बड़ा अंतर हो सकता है। इस बार भी बंगाल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में विरोधाभासी आंकड़े यह संकेत दे रहे हैं कि अंतिम परिणाम पूरी तरह अलग भी हो सकते हैं। यही लोकतंत्र की खूबसूरती है, जहां अंतिम फैसला केवल मतदाताओं के वोट से होता है, न कि किसी सर्वे या अनुमान से। 4 मई को जब मतगणना होगी, तब यह साफ हो जाएगा कि किस राज्य में किसकी सरकार बनेगी और किसके दावे सही साबित होंगे।

फिलहाल, एग्जिट पोल ने सियासी तापमान को चरम पर पहुंचा दिया है। राजनीतिक दल अपनी-अपनी जीत के दावे कर रहे हैं, समर्थक जश्न की तैयारी में जुट गए हैं, और विरोधी खेमे में रणनीति बनाने का दौर जारी है। लेकिन असली तस्वीर अभी पर्दे के पीछे है, जो मतगणना के दिन ही सामने आएगी। तब तक के लिए यह 'गोल-गोल' एग्जिट पोल ही देश की राजनीति में रोमांच और उत्सुकता बनाए हुए हैं।

जैविक खाद में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सूरत के किसान का यज्ञ : 'धनजीवामृत' का औद्योगिक स्तर पर उत्पादन शुरू किया

▸▸ 1 मई को सूरत में आयोजित होने वाली वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) के पहले दिन 'रासायनिक खाद में आत्मनिर्भरता : खाद क्षेत्र में आयात के विकल्प की रणनीतियाँ' विषय पर चर्चा आयोजित होगी, जिसमें कमलेश पटेल सहभागी होंगे

▸▸ प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के लिए कमलेश पटेल रोज 1000 लीटर जीवामृत भी तैयार कर बेचते हैं और 1000 (एक बैग का वजन 40 किलो) धनजीवामृत तैयार करते हैं

▸▸ राज्य में 8 लाख से अधिक किसान रासायनिक खाद का त्याग कर संपूर्ण प्राकृतिक की ओर मुड़े हैं

गांधीनगर : समग्र राज्य में हाल में गर्मी का पारा 44 डिग्री से ऊपर जा रहा है। ऐसे समय में सूरत के मांगरोळिया गाँव में कमलेश पटेल के खेत में 20 से अधिक मजदूर खरीफ मौसम से पहले प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के लिए 'धनजीवामृत' बनाने में व्यस्त हैं।

सूरत जिले की पलसाणा तहसील के अंभेटी गाँव के किसान कमलेश पटेल प्राकृतिक खेती करते हैं। इतना ही नहीं; वे देश में रासायनिक खाद का आयात कम हो तथा उसके सुदृढ़ विकल्प के रूप में धनजीवामृत लाखों किसानों तक पहुँचे; इस संकल्प के साथ बड़े पैमाने पर धनजीवामृत तैयार कर रहे हैं। कृषि विभाग द्वारा प्राकृतिक खेती का प्रचार करने के लिए किसानों को प्रशिक्षण दिया जाता है तथा मास्टर ट्रेनर तैयार किए जाते हैं। कमलेश पटेल भी मास्टर ट्रेनर हैं तथा अनेक किसानों को प्राकृतिक खेती करने की प्रेरणा देते हैं।

राज्य में हाल में 8 लाख से अधिक किसानों ने रासायनिक खाद को त्याग कर संपूर्ण प्राकृतिक खेती की ओर मुड़े हैं। साढ़े पाँच हेक्टेयर से अधिक जमीन में प्राकृतिक हो रही है। प्राकृतिक खेती का दायरा बढ़ने से रासायनिक खाद के विकल्प के रूप में जीवामृत तथा धनजीवामृत का उपयोग होता है और उसकी मांग लगातार बढ़ रही है।

आगामी 1 मई को सूरत में आयोजित होने वाली वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) के पहले दिन 'रासायनिक खाद में आत्मनिर्भरत : खाद क्षेत्र में आयात के विकल्प की रणनीतियाँ' विषय पर चर्चा होगी। कमलेश पटेल इस चर्चा में सहभागी होंगे।

वर्ष 2017 से प्राकृतिक खेती कर रहे कमलेश पटेल ने धनजीवामृत का औद्योगिक स्तर पर उत्पादन शुरू किया है। वे प्रतिदिन 1000 बैग (एक बैग का वजन 40 किलो) तैयार करते हैं और समग्र राज्य तथा राज्य से बाहर उसकी बिक्री करते हैं। उन्होंने चालू वर्ष में दैनिक 2000 बैग तैयार करने का लक्ष्य रखा है।

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में राज्य में प्राकृतिक खेती का विस्तार हो रहा है। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत राज्य के गाँव-गाँव जा रहे हैं और किसानों को प्राकृतिक खेती की ओर मोड़ रहे हैं। इन तमाम प्रयासों के फलस्वरूप; किसान रासायनिक खादों का उपयोग बंद कर उसके विकल्प के रूप में जीवामृत व धनजीवामृत का जैविक खाद के रूप में उपयोग कर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। ये खाद जमीन में सुधार लाते हैं, खेत में सूक्ष्म जीवों की वृद्धि करते हैं, जमीन के पोषक तत्वों में वृद्धि करते हैं और उत्पादन बढ़ाते हैं।

चालू वर्ष में एक लाख बैग धनजीवामृत बनाने का लक्ष्य

कमलेश पटेल ने कहा, "अधिक से अधिक किसान प्राकृतिक खेती की ओर मुड़ रहे हैं। उन्हें जीवामृत व धनजीवामृत की जरूरत पड़ती है। गत वर्ष हमने 50,000 थैलियाँ (40 किलो की एक थैली) बेची थीं और इस वर्ष एक लाख धनजीवामृत की थैली का उत्पादन करने की योजना है।"

सुभाष पालेकर के तीन दिवसीय सेमिनार ने जीवन का मार्ग बदला

वर्ष 2016 में कमलेश पटेल ने सुभाष पालेकर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय 'जीरो बजट प्राकृतिक खेती' संबंधी सेमिनार में भाग लिया था तथा वे उनसे बहुत प्रभावित हुए और उसी क्षण उन्होंने रासायनिक खाद को त्याग दिया तथा प्राकृतिक खेती का मार्ग अपनाया।

प्राकृतिक खेती करने के इच्छुक लोगों ने प्रेरणा दी

वर्ष 2017 में कमलेश पटेल को गन्ने की खेती में प्राकृतिक खेती से उत्तम परिणाम प्राप्त हुए। गन्ने का प्रति बीघा उत्पादन 45 टन हुआ। यह चमत्कार देखकर गाँव के किसानों ने भी इस पद्धति को अपनाने की तैयारी दर्शाई, लेकिन उनके पास जीवामृत व धनजीवामृत नहीं था। वे इन्हें बनाने के झंझट में पड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए किसानों ने कमलेश पटेल को इन दोनों उर्वरकों का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने की प्रेरणा दी और कमलेश पटेल ने जीवामत तथा धनजीवामृत का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया। गुजरात सरकार ने उनकी आर्थिक सहायता भी की। हाल में कमलेश पटेल दैनिक औसत 40,000 किलो धनजीवामृत तथा 1,000 लीटर जीवामृत तैयार कर बेचते हैं। वे धनजीवामृत 6 रुपए प्रति किलो तथा जीवामृत 5 रुपए प्रति लीटर की दर से बेचते हैं। राज्य सरकार के कृषि विभाग द्वारा जीवामृत बनाने के लिए उन्हें बायो रिसोर्स सेंटर (बीआरसी) के लिए सब्सिडी दी जाती है। कृषि विभाग ने धनजीवामृत बनाने के लिए भी आर्थिक सहायता की है।

सूरत नगर निगम के सफाई कर्मचारियों को 10-20-30 वर्षों से उच्च वेतन लाभों से वंचित रखने का मुद्दा

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम में कार्यरत कई सफाई कर्मचारियों को उच्च वेतनमान का लाभ नहीं मिल पा रहा है। सरकारी और सूरत नगर निगम में कार्यरत वे कर्मचारी जो 10 वर्षों से अधिक समय से एक ही पद पर कार्यरत हैं और जिन्हें पदोन्नति नहीं मिली है, उन्हें 10 वर्ष पूरे होने पर उच्च वेतन का लाभ दिया जाता है। हाल ही में संशोधित नियमों के अनुसार, जो कर्मचारी 10, 20, 30 वर्षों से एक ही स्थान पर कार्यरत हैं और जिन्हें पदोन्नति नहीं मिली है, उन्हें 10, 20, 30 वर्ष पूरे होने पर उच्च वेतन का लाभ दिया जाता है। सूरत नगर निगम के कई कर्मचारी 10, 20, 30 वर्षों से उच्च वेतन के लाभ से वंचित हैं। ऐसे कर्मचारियों की कोई शिकायत नहीं सुनी जाती। और जब कर्मचारी अधिकारी के पास जाते हैं, तो उन्हें बताया जाता है कि "अभी हमारे पास बहुत काम है। समय आने पर हम

काम करेंगे। हमारे पास मत आइए।" इस तरह के जवाब क्लर्क (ईसी) कर्मचारियों द्वारा दिए जाते हैं। सूरत नगर निगम में क्लर्कों के 700 से 800 पद रिक्त हैं। और ये पद वर्षों से भरे नहीं गए हैं।

इसलिए यह स्वाभाविक है कि लिपिकीय कर्मचारियों पर काम का बोझ अधिक होता है। लेकिन 10, 20 और 30 वर्षों की सेवा के लिए उच्च वेतन के लाभ के हकदार कर्मचारियों को उनके कानूनी अधिकारों से वंचित करना किस हद तक उचित है? गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भाई लाल बी. वैष्णव ने मांग की है कि सूरत नगर निगम के उच्च अधिकारी सफाई कर्मचारियों की समस्याओं पर ध्यान दें।

संविधान के अनुच्छेद 19 के तहत अधिकारों के उल्लंघन के आरोप, रैलियों पर प्रतिबंध और लोकतंत्र के मुद्दे पर विवाद

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 में, "भाषण की स्वतंत्रता आदि से संबंधित भारत के नागरिकों के कुछ अधिकारों का संरक्षण" शीर्षक के अंतर्गत, भारत के नागरिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लेख है, जिसमें कहा गया है कि सभी नागरिकों को भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है। इसके अतिरिक्त, इसमें यह भी कहा गया है कि सभी नागरिकों को शांतिपूर्ण ढंग से और बिना हथियारों के इकट्ठा होने का अधिकार है। विपक्षी दलों द्वारा आयोजित रैलियों के विरुद्ध गुजरात भाजपा सरकार की पुलिस की कार्रवाई भारत के नागरिकों के मौलिक अधिकारों का पूर्णतः उल्लंघन है। पुलिस द्वारा विभिन्न बहाने बनाकर विपक्षी दलों को सभा या रैली आयोजित करने की अनुमति न देना भी संविधान के नियमों के विरुद्ध है।

महात्मा गांधी, जिन्हें वे अपना आदर्श मानते थे, ने कहा था, "राज्य बलपूर्वक जनता को नियंत्रित करता है, इसलिए हिंसा

ही राज्य के अस्तित्व का आधार है।" मोदी सरकार ने टॉलस्टॉय के इस कथन को अक्षरशः आत्मसात कर लिया है। राज्य का विरोध करने का अधिकार लोकतंत्र का मूलभूत सिद्धांत है। जब जनता को लगता है कि उनके द्वारा चुने गए लोग जनता के हित में काम नहीं कर रहे हैं, तो उन्हें विरोध करने का अधिकार है। और यही लोकतंत्र कहलाता है, लेकिन मोदी सरकार लोकतांत्रिक सिद्धांतों में विश्वास नहीं करती। पिछले 12 वर्षों के शासनकाल से यह सिद्ध हो चुका है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें मोदी सरकार ने पुलिस की क्रूरता और लाठीचार्ज से आंदोलनों को कुचल दिया है, जिनमें किसान आंदोलन एक उदाहरण है।

गुजरात के पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा एवं सुविधा का समन्वय

प्रथम चरण में गिर सोमनाथ, देवभूमि द्वारका तथा डांग जिलों में टूरिस्ट-फ्रेंड्ली वातावरण सुनिश्चित करने के लिए विशेष टूरिस्ट पुलिस थाने स्थापित किए जाएंगे

▸▸ इस पहल का उद्देश्य मात्र कानून-व्यवस्था बनाए रखना ही नहीं, बल्कि गुजरात की यात्रा पर आने वाले देश-विदेश के पर्यटकों को एक सुरक्षित तथा टूरिस्ट-फ्रेंड्ली वातावरण प्रदान करना है : डॉ. के. एल. एन. राव

▸▸ टूरिस्ट पुलिस स्टेशन के पुलिस कर्मचारियों के लिए विशेष यूनिफॉर्म डिजाइन करने पर भी चर्चा हुई

▸▸ पर्यटकों को एक ही प्लेटफॉर्म पर सभी आवश्यक जानकारी तथा सुरक्षा संबंधी सेवाएँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'सेंट्रल इंटरेक्टिव टूरिस्ट पुलिस एप्लिकेशन' विकसित की जाएगी

▸▸ राज्य के पुलिस महानिदेशक डॉ. के. एल. एन. राव की अध्यक्षता में आयोजित हुई महत्वपूर्ण बैठक

गांधीनगर : गुजरात के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों की सुरक्षा, सुविधा तथा सुखद अनुभव में वृद्धि करने के उद्देश्य के साथ राज्य के पुलिस महानिदेशक डॉ. के. एल. एन. राव की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में पुलिस महानिरीक्षक (प्रशासन) सहित गिर सोमनाथ, द्वारका तथा डांग जिलों के पुलिस अधीक्षक उपस्थित रहे।

इस बैठक का मुख्य उद्देश्य पुलिस महानिदेशक (डीजी) तथा पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) कॉन्फ्रेंस की सिफारिशों के अनुसार राज्य के महत्वपूर्ण पर्यटन जिलों में समर्पित 'टूरिस्ट पुलिस स्टेशन' कार्यरत करना है।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में पहले चरण में गिर सोमनाथ, देवभूमि

द्वारका तथा डांग जैसे प्रमुख पर्यटन जिलों में टूरिस्ट-फ्रेंड्ली वातावरण सुनिश्चित करने के लिए विशेष टूरिस्ट पुलिस थाने स्थापित किए जाएंगे।

जिन पर्यटन स्थलों पर पहले से जो पुलिस चौकियाँ कार्यरत हैं, वहाँ उपलब्ध संसाधनों का श्रेष्ठ उपयोग कर उन्हें अत्याधुनिक टूरिस्ट पुलिस थाने के रूप में अपग्रेड किया जाएगा।

पर्यटक पुलिस को आसानी से पहचान सकें तथा सहायता प्राप्त कर सकें; इसके लिए पुलिस कर्मचारियों के लिए विशेष यूनिफॉर्म बनाने तथा वाहनों के लिए एक अनन्य 'लोगो' डिजाइन करने पर भी बैठक में चर्चा की गई।

प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की त्वरित सहायता के लिए कंटेनर आधारित ढाँचे द्वारा 'हेल्प डेस्क' तथा 'कीयोस्क' भी स्थापित किए जाएंगे।

पर्यटकों को एक ही प्लेटफॉर्म पर सभी आवश्यक जानकारी तथा सुरक्षा संबंधी सेवाएँ मुहैया कराने के उद्देश्य से सभी पुलिस अधीक्षकों (एसपी) को एक सेंट्रल 'इंटरेक्टिव टूरिस्ट पुलिस एप्लिकेशन' विकसित करने के निर्देश दिए गए हैं।

इतना ही नहीं; इस बैठक में हर टूरिस्ट पुलिस स्टेशन में पर्याप्त संख्या में मानव बल, नए वाहनों की खरीदारी तथा आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर सुनिश्चित करने पर बल दिया गया।

राज्य के पुलिस महानिदेशक डॉ. के. एल. एन. राव ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखना नहीं, बल्कि गुजरात की यात्रा पर आने वाले देश-विदेश के पर्यटकों को एक सुरक्षित तथा मैत्रीपूर्ण (टूरिस्ट-फ्रेंड्ली) वातावरण प्रदान करना है।

राज्य पुलिस विभाग द्वारा आगामी समय में इस आयोजन को वेग देने के लिए गुजरात के पर्यटन क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर अधिक सुरक्षित बनाने की मंशा व्यक्त की गई है।